

شری لسہ کول صاحب بادام

آج ہم کشمیری پنڈت جاتی کے ادنےٰ خادم اس بات کے لئے سرگ دھام میں جمع ہوئے ہیں کہ کشمیری پنڈت جاتی نے گذشتہ اگست ۱۹۶۷ میں جاتی سدھار کے لئے جو آندولن چلایا تھا اور جس آندولن کو پروان چڑھانے کے لئے ہم نے سردھڑ کی بازی لگاکر اپنے خون سے ماتر بھوی کو لالہ زار بنایا تھا اس کا جائزہ لیں سرگ دھام کوئی خاص جگہ نہیں یہ ایک ذہنی کیفیت ہے جس سے لوگ عام بول چال میں جنت کہتے ہیں یہاں گانم کا سب سے یہ بھی تو ایک ناخوش گوار ذہنیت مقام ہے پیشتر اس کے میں اپنا جائزہ پیش کروں میں کشمیری پنڈت جاتی کے خادم اعلیٰ یا شہید اعظم شری مہاراج کشن رازدان سے درخواست کروں گا کہ وہ اپنا جائزہ پیش کریں۔

شری مہاراج کرشن رازدان

جناب صدر بادام صاحب اور ساتھیو!

میں نے گذشتہ اگست میں جب ایک معصوم اور بے بس کاری پر ہندو پر ڈھائے ہوئے اپنا چار کی کہانی سنی تو ایک غیرت مند نوجوان کی حیثیت میں مجھ سے رہا نہ گیا میں نے ایکشن کمیٹی کے چلانے والے نوجوانوں کا ساتھ دیا اصلی مقصد آندولن کا یہ تھا کہ سماج کا سدھار ہو اور کے دن کی ناانصافیوں سے جاتی کو بچایا جائے میں ایک سال کے بعد کافی دکھ محسوس کر رہا ہوں کہ ہماری جاتی میں بُری رسموں نے ناسور پیدا کر دیا ہے شادی بیاہ کے موقعوں پر ہماری قربانیوں کے پیش نظر کشمیری پنڈتوں نے پچھلے سال سے سوشل ریفارم کو گلے لگایا اور حرف بحرف سوشل کورٹ کی رہنمائی میں بھی رسومات انجام دیئے لیکن اس سال تو تازہ دولت مندوں اور چور بازار میں کام کرنے والوں نے سوشل ریفارم کورٹ کی دھجیاں آسمان میں بکھیر دیں ان لوگوں کو اتنا بھی احساس نہیں کہ ہم نے اپنے ابھرتے ہوئے ارمانوں کو دبا کر جاتی کی بھلائی کی خاطر اپنی اٹھتی جوانیاں نثار کر دیں۔

جن نوجوانوں کو آج شادی بیاہ کے بازار میں بولی پر چڑھایا جاتا ہے ہم بھی وہ جیسے نوجوان تھے ہمارے دلوں میں محبت سے بھری ہوئی دھڑکنیں تھیں

وہ بھی چاہتی تھیں کہ ہمارا دلہا لائیگا، گھر بسے گا خود کمائیگا
لیکن جاتی کی آواز سنتے ہی ہم نے
کو آگ لگادی ماتا پتا کو ہمیشہ
آنسو پینے پر مجبور کیا مگر جاتی کی
کے لئے اپنی امنگوں والی جوانی
کردی، میں اپنے خون کی
ہاتھ جوڑ کر اپنی جاتی کے
اور بھائی بہنوں سے برار
وہ اپنے تو ارتجا عہد کو یاد
نے ہماری جلتی ہوئی چتاؤں
کرکے دل کی گہرائیوں سے
کیا تھا آپ کو میرے جیسے
آپ سوشل ریفارم کورٹ کو
ورنہ ہماری اتمائیں پرماتما
کو یہ ماننا پڑیگی جن کی شادی
کے ساتھ سرانجام پائی گی

شری ہردے ناتھ صاحب

مجھے راز دان صاحب
سو نہیدی اتفاق ہے
ہوکر جاتی والوں سے
سوشل ریفارم کورٹ کو
کے علاوہ میں جاتی کی
زور دینا چاہتا ہوں
قوم کی جو رہنمائی کی
لیکن اب وقت آگیا ہے
اور برگزیدہ نوجوانوں
موقعہ دیا جانا چاہئے
کم سنجیدہ جوان ہونے
مختلف شعبوں سے تعلق
وطن اور جاتی کے لئے
جنرل سیکریٹری ایک
ہونا چاہئے جو تن من
کی سیوا کرنے پر تیار
اگر مستحکم ہے تو دنیا
برادری جاتی کو
مرکزی سنستھا کی ایک
کرسکتی ہے مثلاً تعلیم
سب کیٹی، اقتصادی
سماج کے لئے روپیہ
کوئی تعمیری کام
پورا کرنے کے لئے
اعداد کا دوڑنا
رکھنا چاہئے جب

हेअर्जुन जो जो प्राणी ऐश्वर्यवालाहै तथा लक्ष्मीवालाहै तथा बलवालाहै तिस तिस प्राणीकूं हीं तूं मैंपरमेश्वरके शक्तिकेअंश करिकैउत्पन्नहूआ जान ॥ ४१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

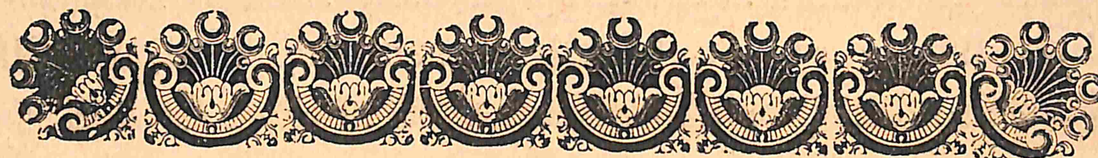
॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषे जोजोप्राणी ऐश्वर्यरूपविभूतिकरिकै युक्तहै ॥ तथा जोजोप्राणी श्रीमत्है ॥ अर्थात् लक्ष्मीकरिकै वासंपदाकरिकै वाशोभाकरिकै वाकांतिकरिकै युक्तहै ॥ तथा जोजोप्राणी अत्यंतबलादिकोंकरिकैयुक्तहै ॥ तिसतिसप्राणीकूंहीं तूं मैंपरमेश्वरकीशक्तिकेअंशकरिकैउत्पन्नहुआ जान इति ॥ यहभगवान्‌कावचन पूर्वनहीं कथनकरीहुईविभूतियोंकेभीसंग्रहकरावणेवास्तैंहै इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार एकदेशरूप अवयवकरिकै विभूतिकूंकथनकरिकै अब सकलतारूपकरिकै तिसविभूतिकूं कहेहैं ॥

(मू०श्लो०)अथवाबहुनैतेनकिंज्ञातेनतवार्जुन ॥ विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत्॥४२॥इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविभूतियोगोनामदशमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १० ॥ अथवा । बहुना । एतेन । किं । ज्ञातेन । तव । अर्जुन । विष्टभ्य । अहम् । इदम् । कृत्स्नम् । एकांशेन । स्थितः । जगत् ॥ ४२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ अथवा हेअर्जुन इस बहुत ज्ञातकरिकै तुमारा क्याप्रयोजनसिद्धहोवैगा ईस सर्व जगत्कूं मैंपरमेश्वर एकदेशकरिकै धारणकरिकै स्थितहूआहूं ॥ ॥ ४२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (अथवा) यहपद पूर्वउक्तविभूतिपक्षतेभिन्नपक्षकावाचकहै ॥ सोपक्षांतर कहेहै ॥ हेअर्जुन (आदित्यानामहंविष्णुः) इत्यादिकवचनोंकरिकै मंदअधिकारीपुरुषोंकेध्यानवासतै कथनकरीजा हमनैं आपणीसावशेष विभूतिहै ॥ इसबहुतप्रकारकीसावशेषविभूतिकेज्ञानकरिकै तैंउत्तमअधिकारीकूं कौनफलहैं ॥ किंतु कोईभीफल तेरेकूंनहीं ॥ जिसकारणतैं पूर्वउक्तयत्किंचित्विभूतिकेज्ञानहुएभी हमारीसर्वविभूतियोंकाज्ञान होतानहीं ॥ यातैं तैंउत्तमअधिकारीकूंतौं याप्रकारतैं हमाराध्यानकऱ्याचाहीये ॥ हेअर्जुन मैंपरमात्मादेव इससर्वजगत्कूं आपणेएकदेशमात्रकरिकै धारणकरिकै अथवा व्याप्त करिकै स्थितहूं मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (पादोऽस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतंदिवि) ॥ अर्थयह ॥ इसपरमात्मादेवका यहसर्व विश्व एकपादहै ॥ और तीनपादतौ आपणेनिर्गुणस्वयंज्योतिस्वरूपविषेस्थितहैं इति ॥ यातैं हेअर्जुन द्वादशआदित्योंविषे विष्णुनामाआदित्यमैंहूं तथानक्षत्रोंकेमध्यविषेचंद्रमामैंहूं इत्यादिकपरिच्छिन्नदृष्टिकापरित्यागकरिकै तूं सर्वजगत्विषे मैंपरमात्मादेवकूंव्यापकदेख इति ॥ यद्यपि निरवयवनिराकारपरमा

त्माका अंश तथापाद संभवतानहीं ॥ तथापि जैसे निरवयवआकाशके घटमठादिकउपाधियोंकरिकै घटाकाश मठाकाश मेघाकाश इत्यादिकअंशोंकीकल्पनाहोवैहैं ॥ तैसे निरवयवनिराकारपरमात्मादेवकेभी अविद्यादिकउपाधियोंकरिकै तेअंश तथापाद कल्पनाकरेजावैहैं ॥ वास्तवतैं तेअंश तथापादहैनहीं इति ॥ ४२ ॥ ❁ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां दशमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १० ॥

इति दशमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १० ॥



ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः॥अथएकादशाध्यायप्रारंभः॥ तहां पूर्वदशमअध्यायविषे श्रीभगवान् नानाप्रकारकीविभूतिकूंकथनकरिकै ताकेअंतविषे (विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत्) इसवचनकरिकै परमेश्वरके सर्वविश्वात्मकस्वरूपकूं कथनकरताभया ॥ तिसकूंश्रवणकरिकै परमउत्कंठाकूंप्राप्तहुआ सोअर्जुन परमेश्वरके तिस सर्वविश्वात्मकस्वरूपकेसाक्षात्कारकरणेकीइच्छाकरताहुआ तथापूर्वउक्तअर्थकीप्रशंसाकरताहुआ याप्रकारकावचन कहताभया ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ मदनुग्रहायपरमंगुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ॥ यत्त्वयोक्तंवचस्तेनमोहोयंविगतोमम ॥ १ ॥ मदनुग्रहाय। परमं। गुह्यम्। अध्यात्मसंज्ञितं। यत्। त्वया। उक्तं। वचः। तेन। मोहः। अयं। विगतः। मम॥१॥(इतिपदच्छेदः)॥हेभगवन् हमारेअनुग्रहवासतै आपनैं जो परम गुह्य अध्यात्मनामवाला वचनं कथनं कर्याहे तिसवचनकरिकै मैंअर्जुनका यह मोह नष्टहोताभयाहै ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् यह हमारे भ्रातापुत्रादिकसर्वबांधव मरणकूंप्राप्तहोतेहैं और मैंअर्जुन इनोंकाहननकरताहूं इसप्रकारकेशोकमोहरूपसागरविषे डूब्याहुआ जोमैंअर्जुनहूं ॥ तिसहमारेअनुग्रहवासते अर्थात् तिसशोकमोहकी निवृत्तिरूपउपकारवासते परमकृपालुसर्वज्ञआपनै (अशोच्यानन्वशोचस्त्वम्) इसवचनतैंआदिलेके षष्ठेअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत त्वंपदार्थकानिरूपक जोवाक्य कथनकर्याहे ॥ कैसाहैसोवाक्य परमहे ॥ अर्थात् निरतिशयमोक्षरूपपुरुषार्थविषे परिअवसानवालाहै ॥ अथवा परम कहिये शीघ्रहीशोकमोहकानिवर्त्तकहोणेतैं उत्कृष्टहै ॥ पुनःकैसाहैसोवचन गुह्यहै ॥ अर्थात् शास्त्रनिषिद्धकर्मविषेप्रवृत्त तथाश्रद्धातैंरहित तथाविषयोंविषेआसक्त ऐसेअनधिकारीपुरुषोंकूं नहींदेणेयोग्यहै ॥ पुनःकैसाहैसोवचन अध्यात्मसंज्ञितहै ॥ अर्थात् आत्माअनात्माकेविवेककूंविषयकरणेहारा है॥ तहां आत्माअनात्माकेविवेककरणेवासतैजोशास्त्रहै ताकानाम अध्यात्महै ॥ सोअध्यात्महै संज्ञा क्या नाम जिसका ताकानाम अध्यात्मसंज्ञितहै॥ ऐसे आपके वचनकरिकै मैंअर्जुनका यह स्वअनुभवसिद्धमोह नष्टहोताभयाहै ॥ अर्थात् मैंअर्जुन इनभीष्मद्रोणादिकोंकाहननकरताहूं तथामैंअर्जुननैं यहभीष्मद्रोणादिक हनन करीतेहैं इत्यादिक नानाप्रकारकाविपर्ययरूपमोह हमारा तिसआपकेवचनकरिकैनष्टहोताभयाहै ॥ जिसकारणतैं तिसपूर्वउक्तवचनविषे (नायंहंतिनहन्यते नजायतेम्रियतेवाकदाचित् वेदाविनाशिनंनित्यम् अच्छेद्योयमदाह्योयम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै इसआत्माकूं आपनैं सर्वविकारोंतैंरहितकथनकर्याहै तिसकारणतैं सोहमारामोह अभी नष्टहोताभयाहै ॥ तहां इसश्लोकके प्रथमपादविषे जोएकअक्षरअधिकहैसोआर्षहै अर्थात् ऋषिप्रणीतहोणेतैं दुष्टनहींहै इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां

जैसे त्वंपदार्थकानिर्णयहै प्रधानजिसविषे ऐसा षष्ठेअध्यायपर्यन्त आपकावचन हमनैं श्रवणकऱ्याहै॥ तैसे तत्पदार्थकानिर्णयहैप्रधानजिसविषे ऐसा सप्तअध्यायतैंआदि लैके दशमअध्यायपर्यंत आपकावचनभी हमनैं श्रवणकऱ्याहै इसवार्त्ताकूं अर्जुन कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) भवाप्ययौहिभूतानांश्रुतौविस्तरशोमया ॥ त्वत्तःकमलपत्राक्षमाहात्म्यमपिचाव्ययम् ॥ २ ॥ भवाप्ययौ । हिं । भूतानां । श्रुतौ । विस्तरशः । मया । त्वत्तः । कमलपत्राक्ष । माहात्म्यम् । अपि । चं । अव्ययम् ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकमल पत्राक्ष इनभूतोंके उत्पत्तिप्रलय दोनोंतैं भगवान्तैं हीं हमनैं विस्तारतैं श्रवणकऱ्येहै तथा आपकासोपाधिक माहात्म्य तथा नि रुपाधिक अव्ययरूपमाहात्म्य भी हमनैं श्रवणकऱ्याहै ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेकमलपत्राक्ष श्रीभगवान् ॥ ईहां कमलकेपत्रकीन्यांई दीर्घ तथाविशाल तथाकिंचित्रक्ततायुक्त तथा अत्यंतमनोरमहैं अक्षि क्या नेत्र जिसके ताकानाम कमलपत्राक्षहै ॥ इससंबोधनकरिकै अर्जुननैं भगवान्की जो अत्यंतसौंदर्यता कथनकरीहै ॥ सो परमेश्वरविषयकप्रेमकीअतिशयतातैं कथनकरीहै ॥ अथवा (हेकमलपत्राक्ष) इससंबोधनका यहअर्थकरणा ॥ (कमलतिप्रकाशयतिइतिकमलमात्मज्ञानम् ॥) अर्थयह ॥ स्वस्वरूपानंदरूपजोब्रह्मसुखहै ताकानाम कंहै ॥ तिसब्रह्मसुखकूं जोप्रकाशकरेहै ताकानाम कमलहै ॥ ऐसा महावाक्यजन्य आत्मज्ञानहै ॥ आत्मज्ञानकरिकैहीं ताब्रह्मसुखका प्रकाशहोवेहै ॥ तथा (पत नात्त्रायतेइतिपत्रम् ॥) अर्थयह ॥ इनअधिकारीपुरुषोंकूं इसजन्ममरणकेप्रवाहरूपसंसारसमुद्रविषेपतनतैं जोरक्षणकरेहै ताकानाम पत्रहै ॥ ऐसापत्ररूपभी सो आत्मज्ञानहींहै ॥ अर्थात् कमलरूपहोवै तथासोईहींपत्ररूपहोवै ताकानाम कमलपत्रहै ॥ (कमलपत्रेणअक्ष्यतेप्राप्यतेइतिकमलपत्राक्षः) ॥ अर्थयह ॥ तिस कमलपत्रनामा आत्मज्ञानकरिकै जोप्राप्तहोवै ताकानाम कमलपत्राक्षहै ॥ अर्थात् हेआत्मज्ञानकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य शुद्धपरब्रह्म ॥ तैंपरमेश्वरतैंहीं इनसर्वभूतोंके उत्पत्तिप्रलय हमनैं (अहंकृत्स्नस्यजगतःप्रभवःप्रलयस्तथा॥प्रकृतिंस्वामवष्टभ्य अहंसर्वस्यप्रभवः)इत्यादिकवचनोंकरिकै विस्तारतैं श्रवणकऱ्येहैं॥कोईसंक्षेपतैंएकहींबार श्रवणनहींकऱ्ये ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरतैं इनसर्वभूतोंकेउत्पत्तिप्रलयकूंहीं केवल हमनैं नहींश्रवणकऱ्या ॥ किंतु तुमारा माहात्म्यभी हमनैं बहुतवार श्रवणकऱ्या है ॥ तहां महात्मारूपपरमेश्वरका जोनिरतिशयऐश्वर्यरूपभावहै ताकानाम माहात्म्यहै ॥ सोमाहात्म्य यहहै ॥ इसलोकविषे जोकर्त्ताहोवैहै सोविकारीहीं होवैहै ॥ और यहपरमेश्वरतौं इसजगत्केउत्पत्तिआदिकोंकाकरताहुआभी अविकारीरूपहींहै ॥ और इसलोकविषे जोपुरुष दूसऱ्योंकूंप्रेरणाकरिकै शुभअशुभकर्मकरावैहै ॥ सोपुरुष विषमतादोषवालाहीं होवैहै ॥ और यहपरमेश्वर तौं जीवोंकूंप्रेरणाकरिकै शुभअशुभकर्मकरावताहुआभी विषमतादोषतैंरहितहै ॥ और इसलोक

विषे जोपुरुष विचित्रफलकाप्रदाताहोवैहैं ॥ सोपुरुष असंगउदासीनहोवैनहीं ॥ और यहपरमेश्वरतैं बंधमोक्षादिकविचित्रफलका प्रदाताहुआभी असंग उदासीनहीं है ॥ इसतै आदिलैकेंदूसराभी सर्वात्मत्व आदिक सोपाधिकमाहात्म्य हमनैं बहुतवार श्रवणकऱ्याहै ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरका केवल यहसोपाधिकमाहात्म्यहीं हमनैं श्रवणनहींकऱ्या ॥ किंतुआपपरमेश्वरका निरुपाधिक अव्यय रूपमाहात्म्यभी हमनैं श्रवणकऱ्याहै ईहां व्ययनाम नाशकाहै तानाशतैंजोरहितहोवै ताका नाम अव्ययहै इति ॥ २ ॥ ॥

(मू० श्लो०) एवमेतद्यथात्थत्वमात्मानंपरमेश्वर ॥ द्रष्टुमिच्छामितेरूपमैश्वरंपुरुषोत्तम ॥ ३ ॥ एवम् । एतत् । यथा । आत्थ । त्वम् । आत्मानं । परमेश्वर । द्रष्टुम् । इच्छामि । ते । रूपम् । ऐश्वरं । पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपरमेश्वर जिसप्रकारतैं आपणेआत्माकूं तूंकथनकरताहैं सोआपकाकहणा यथार्थहींहै तथापि हेपुरुषोत्तम तुमारा ऐश्वर रूप देखणेकूं मैं इच्छाकरता हूं ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेपरमेश्वर जिस सोपाधिक निरतिशय ऐश्वर्यरूपकरिकै तथा जिस निरुपाधिक निरतिशयऐश्वर्यरूपकरिकै आप आपणेस्वरूपकूं कथनकरतेभयेहो ॥ सोआपकाकहणा यथार्थहींहै ॥ किसीकालविषेभी आपकाकहणा अयथार्थनहींहै ॥ अर्थात् तुमारेवचनविषेकहांभी हमारेकूं अविश्वासकीशंकानहींहै ॥ हेपुरुषोत्तम यद्यपि हमारा आपकेवचनोंविषे दृढविश्वासहै ॥ तथापि कृतार्थहोणेकीइच्छाकरिकै मैंअर्जुन तुमारे ऐश्वररूपकेदेखणेकीइच्छाकरताहूं ॥ अर्थात् ज्ञान ऐश्वर्य शक्ति बल वीर्य तेज इत्यादिगुणोंकरिकैसंपन्न जोआपईश्वरका अद्भुतस्वरूपहै ताकानाम ऐश्वररूपहै तारूपकेदेखणेकीमैंइच्छाकरताहूं ॥ तहां सर्व पुरुषोंतै सर्व ज्ञतादिकगुणोंकरिकै जो उत्तमहोवै ताकानाम पुरुषोत्तमहै ॥ इसपुरुषोत्तमसंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्के प्रति यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ हेभगवन् तुमारेवचनविषे हमारेकूं अविश्वासनहींहैं ॥ तथा आपके तिसऐश्वररूपकेदेखणेकीइच्छाभी हमारेकूंबहुतहै ॥ इसहमारेहृदयकेवृत्तांतकूं आप सर्वज्ञहोणेतैं तथाअंतर्यामीहोणेतैं जानतेहीहो इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन तुमारेकरिकै देखणेकूंअशक्य जोहमारास्वरूपहै ॥ तिसस्वरूपकेदेखणेकीइच्छा तूंकिसवासतैकरता हैं ॥ जोवस्तुदेखणेकूंशक्यहोवैहै ॥ तिसवस्तुकेहीं देखणेकीइच्छाकरणी उचितहोवैहैं ॥ ऐसी श्रीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुन कहेहै ॥

(मू० श्लो०) मन्यसेयदितच्छक्यंमयाद्रष्टुमितिप्रभो ॥ योगेश्वरततोमेत्वंदर्शयात्मानमव्ययम् ॥ ४ ॥ मन्यसे । यदि । तत् । शक्यं । मया । द्रष्टुम् । इति । प्रभो । योगेश्वर । ततः । मे । त्वं । दर्शय । आत्मानम् । अव्ययम् ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेप्रभो

सोतुमारा ऐश्वररूप मैंअर्जुननैं देखणेकूं शक्यहै इसप्रकार जबी आप मानतेहोवौ तबी हे योगियोंकेईश्वर हमारेतांई आप नाशतैंरहित तिसऐश्वररूपविशिष्ट आत्माकूं दिखावो ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां सृष्टि स्थिति संहार प्रवेश प्रशासन इनपांचोंकेकरणेविषे जो समर्थहोवै ताकानाम प्रभुहै ॥ हेप्रभो अर्थात् हेसर्वकेस्वामिन् ॥ सोआपका ऐश्वररूप मैंअर्जुननैं देखणेकूं शक्यहै ॥ ऐसे जबीआप मानतेहोवौ ॥ अर्थात् ऐसेनबीआपजानतेहोवौ ॥ अथवा यहअर्जुन इसहमारेरूपदेखै ऐसीजबी आप इच्छाकरतेहोवौ ॥ तबीहेसर्वयोगियोंकेईश्वर तिसआपकीइच्छाकेवशतैं मैंअत्यंतजिज्ञासुअर्जुनकेतांई परमकारुणिकआप तिसऐश्वररूपविशिष्ट तथानाशतैं रहित आत्माकूं दिखावौ ॥ अर्थात् तिसआपकेस्वरूपकूं हमारेचक्षुवोंका विषयकरौ ॥ ईहां जेपुरुष अणिमादिकअष्टसिद्धियोंकरिकैयुक्तहैं तिनोंकानाम योगीहै ॥ तिनसर्वयोगियोंकाजोईश्वरहोवै ताकानाम योगेश्वरहै ॥ इसयोगेश्वरसंबोधनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ भगवान्केप्रति सूचनकऱ्या ॥ अणिमादिकसिद्धियोंकरिकैयुक्तजेयोगीपुरुषहैं ॥ तेयोगीपुरुषभी आपणीइच्छाकेवशतैं अशक्यकार्यकूंभी सिद्धकरिसकेहै ॥ और आपतौं तिनयोगियों केभी ईश्वरहो ॥ अर्थात् आपपरमेश्वरकेध्यानकरिकैहीं तिनयोगीपुरुषोंकूं ऐसा सामर्थ्य प्राप्तभयाहै ॥ यातैं आप जोकदाचित् तिसस्वरूपकेदिखावणेकी इच्छाकरोगे ॥ तौंमैंअर्जुनतिसआपकेस्वरूपकूं अवश्यकरिकैदेखूंगा इति ॥ अथवा (हेयोगेश्वर) इससंबोधनका यहदूसराअर्थ करणा ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका जो जीवब्रह्मकेएकत्वकादर्शनरूपज्ञानयोगहै ताकानाम योगहै ॥ तायोगकाजोईश्वरहोवै ॥ अर्थात् अधिकारीजनोंकेप्रति ताज्ञानयोगकीप्राप्तिकरणेविषे जो समर्थहोवै ताकानाम योगेश्वरहै इति ॥ ४ ॥ ❁ ॥ इसप्रकार अत्यंतभक्तअर्जुनकरिकै प्रार्थनाकऱ्याहुआ श्रीभगवान् ताअर्जुनकेप्रति तिसस्वरूपकेदिखावणे कीइच्छाकरताहुआ कहेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) श्रीभगवानुवाच ॥ पश्यमेपार्थरूपाणिशतशोऽथसहस्रशः ॥ नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनिच ॥ ५ ॥ पश्य । मे । पार्थ । रूपाणि । शतशः । अथ । सहस्रशः । नानाविधानि । दिव्यानि । नानावर्णाकृतीनि च ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपार्थ नानाप्रकारकेवर्णतथाआकृतिहैंजिनोंके ऐसे नानाप्रकारके अद्भुत अनेक शत तथा अनेकसहस्र मैं परमेश्वरके रूपोंकूं तूं देख ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां इसश्लोकतैंआदिलेकेअगलेच्यारिश्लोकोंविषे क्रमतैं (पश्य) इसशब्दकीआवृत्तिकरिकै श्रीभगवान् तेआपणेदिव्यरूप मैं तुमारेकूंदिखा

वताहूं तूं सावधानहोउ इसप्रकार ताअर्जुनकूं अभिमुखकरताभयाहै ॥ और (शतशःअथसहस्रशः) इनसंख्यावाचक दोनोंपदोंकरिकै श्रीभगवान्नैं तिनरूपोंविषे अपरिमितरूपता कथनकरीहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ हेअर्जुन विलक्षणविलक्षण नीलपीतादिकवर्ण हैं जिनोंके तथाविलक्षणविलक्षण अवयवोंकीरचनाविशेषरूपआकृतिहैजिनोंकी ऐसेजे अनेकप्रकारके तथाअत्यंतअद्भुत तथाअपरिमितसंख्यावाले मैंपरमेश्वरकेरूपहैं तिनरूपोंकूं तूंदेख ॥ अर्थात् तिनरूपोंकेदेखणेकूं तूं योग्यहोउ इति ॥ ५ ॥ ❁ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति आपणे दिव्यरूपोंकेदिखावणेकीप्रतिज्ञा करी ॥ अब तिसप्रतिज्ञाकेपूर्ण करणेवासतै श्रीभगवान् तिसअर्जुनकेप्रति दोश्लोकोंकरिकै यत्किंचित्मात्र तेआपणेरूप कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौमरुतस्तथा ॥ बहून्यदृष्टपूर्वाणिपश्याश्चर्याणिभारत ॥ ६ ॥ पश्य । आदित्यान् । वसून् । रुद्रान् । अश्विनौ । मरुतः । तथा । बहूनि । अदृष्टपूर्वाणि । पश्य । आश्चर्याणि । भारत ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन तूं आदित्योंकूं तथावसुवोंकूं तथारुद्रोंकूं तथा अश्विनीकुमारोंकूं तथामरुतोंकूं देख तथा पूर्वनहींदेखेहुए बहुत अद्भुत रूपोंकूं देख ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तूं द्वादशआदित्योंकूंदेख ॥ तथा अष्टवसुवोंकूंदेख ॥ तथा एकादशरुद्रोंकूंदेख तथा दोनोंअश्विनीकुमारोंकूंदेख ॥ तथा ओगणपंचास मरुतोंकूंदेख ॥ तथा इनोंतैंअन्य दूसरेभीदेवतावोंकूं तूं देख ॥ हेअर्जुन जेरूपतैंअर्जुननै तथा किसीअन्यप्राणीनैं इसमनुष्यलोकविषे कबीभी देखेनहींहैं ॥ ऐसेबहुत अद्भुतरूपोंकूं अबीतूंदेख इति ॥ तहां (बहूनि) यहवचन (शतशोथसहस्रशः) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (आदित्यान्वसून् रुद्रानश्विनौमरुतस्तथा) ॥ यहवचन (नानाविधानि) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (अदृष्टपूर्वाणि) यहवचन (दिव्यानि) इसपूर्वउक्त वचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (आश्चर्याणि) यहवचन (नानावर्णाकृतीनिच) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै इति ॥ ६ ॥ ❁ ॥ हेअर्जुन केवल इतनैंमात्ररूपोंकूंहीं तूं देखणेयोग्यनहींहैं ॥ किंतु यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगतहीं हमारेदेहविषेस्थितहुआतूंदेख ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसचराचरम् ॥ ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥ ७ ॥ इह । एकस्थम् । जगत् । कृत्स्नम् । पश्य । अद्य । सचराचरम् । मम । देहे । गुडाकेश । यत् । च । अन्यत् । द्रष्टुम् । इच्छसि ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन हमारे इस देहविषे एकअवयवविषेस्थित जंगमस्थावरसहित समस्त जगतकूं तूं आज देख तथा जो कोई अन्यभीजय पराजयादिक देखणेकूं इच्छाकरताहैं सोभीदेख ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेगुडाकेश अर्थात् हेनिद्राकूंजयकरणेहारा अर्जुन ॥ इसहमारेदेहविषे किसीएक नखकेअग्रमात्ररूपअवयवविषेस्थित इसस्थावरजंगमसहित समग्र जगत्कूं तूं अबी देख ॥ जोसर्वजगत् तिसतिसस्थानविषेभ्रमणकरिकै शतकोटीवर्षपर्यंतभी देखणेकूंअशक्यहै ॥ तिससर्वजगत्कूं तूं अबी एकत्रस्थितहुआहीं देख ॥ हेअर्जुन जोकोई अन्यभी जयपराजयादिकोंकेदेखणेकीइच्छाकरताहोवैं ॥ तिनजयपराजयादिकोंकूंभी तूं आपणेसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै इसहमारे देहविषेदेख इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ तहां (मन्यसेयदितच्छक्यंमयाद्रष्टुमितिप्रभो) ॥ अर्थयह ॥ सोआपकाऐश्वररूप मैंअर्जुननैं देखणेकूंशक्यहै इसप्रकार जो आप मानतेहोवै तौं सोरूप हमारेकूंदिखावो ॥ यहजोवचन पूर्व अर्जुननैं श्रीभगवान्केप्रति कथनकऱ्याथा ॥ तिसरूपकेदेखणेविषे श्रीभगवान् अब किंचित् विशेषता कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) नतुमांशक्यसेद्रष्टुमनेनैवस्वचक्षुषा ॥ दिव्यंददामितेचक्षुःपश्यमेयोगमैश्वरम् ॥ ८ ॥ न । तु । मां । शक्यसे । द्रष्टुम् । अनेन । एव । स्वचक्षुषा । दिव्यं । ददामि । ते । चक्षुः । पश्य । मे । योगम् । ऐश्वरम् ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तूं पुनः इस आपणीचक्षुकरिकै दिव्यरूपमैंपरमेश्वरकूं कदाचित्भी देखणेकूं नहीं समर्थहैं इसकारणतैं मैंपरमेश्वर तुमारेतांई दिव्य चक्षु देताहूं तिसदिव्यचक्षुकरिकै मैंपरमेश्वरके ऐश्वर्यरूप योगकूं तूंदेख ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहस्वभावतैंसिद्ध जोतुमाराप्राकृतचक्षुहै ॥ इसप्राकृतचक्षुकरिकै दिव्यरूपवालेमैंपरमेश्वरके देखणेकूं तूं कदाचित्भी समर्थनहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवान् तबी मैंअर्जुन तिसतुमारेस्वरूपकूं कैसेदेखसकउगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (दिव्यमिति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके तिसदिव्यरूपकेदेखणेविषेसमर्थ ऐसी दिव्य कहिये अप्राकृतचक्षुकूं मैंपरमेश्वर तुमारेतांई देताहूं ॥ तिसदिव्यचक्षुकरिकै तूं अर्जुन मैंपरमेश्वरकेयोगकूं अर्थात् नवनतेहुएअर्थ केबनावनेकीसामर्थ्यतारूपयोगकूं देख ॥ कैसाहैसोयोग ऐश्वरहै ॥ अर्थात् मैंईश्वरकाहीं असाधारणधर्महै ॥ अन्यकिसीविषे सोयोग रहतानहीं ॥ ईहां किसी पुस्तकविषे (नतुमांशक्ष्यसे) इसप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ तापाठका यहअर्थकरणा ॥ तूं अर्जुन इसचक्षुकरिकै दिव्यरूपवालेमैंपरमेश्वरकेदेखणेकूं समर्थ नहींहोवैंगा इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान् अर्जुनकेतांई सोआपणादिव्यरूप दिखावताभया ॥ तिसरूपकूंदेखिकै अत्यंतविस्मयकूंप्राप्तहुआ सोअर्जुन श्रीभगवान्के प्रति सोदेख्याहुआदिव्यरूप कथनकरताभयाइसवृत्तांतकूं (एवमुक्त्वा) इत्यादिकषट्श्लोकोंकरिकै धृतराष्ट्रकेप्रति संजयकहेहै ॥

(मू०श्लो०) संजयउवाच ॥ एवमुक्त्वाततोराजन्महायोगेश्वरोहरिः ॥ दर्शयामासपार्थायपरमंरूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥ एवम् । उक्त्वा ।

ततः । राजन् । महायोगेश्वरः । हरिः । दर्शयामास । पार्थाय । परमं । रूपम् । ऐश्वरम् ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥हेधृतराष्ट्र सोमहानयोगेश्वर कृष्णभगवान् इसप्रकारकावचन कहिकै तिसतैंअनंतर अर्जुनकेतांई आपणे दिव्य ऐश्वर रूपकूं दिखावताभया ॥ ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र सोमहायोगेश्वरहरि अर्थात् सर्वतैं उत्कृष्ट तथासर्वयोगिजनोंकाईश्वर तथाआपणे भक्तजनोंकेसर्वक्लेशोंकूंहरणकरणेहारा कृष्णभगवान् ॥ इसप्राकृत चक्षुकरिकै तूं अर्जुन दिव्यरूपमैंपरमेश्वरकूं नहींदेखसकैंगा यातैं मैं तुमारेकूं दिव्यचक्षु देताहूं याप्रकारकावचन तिसअर्जुनकेप्रति कहिकै ॥ तिस दिव्यचक्षुकेदणेतैंअनंतर तिसअनन्यभक्तअर्जुनकेतांई देखणेविषेअशक्यभीआपणेदिव्यऐश्वररूपकूं दिखावताभया इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ अब तिसदिव्यरूपकूं अनेकविशेषणोकरिकैयुक्त कथनकरेहैं ॥

(मू०श्लो०) अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ॥ अनेकदिव्याभरणंदिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥ अनेकवक्त्रनयनम् । अनेकाद्भुतदर्शनम् । अनेकदिव्याभरणं । दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेराजन् अनेकहैंमुखतथानेत्रजिसविषे तथा अनेकअद्भुतवस्तुवोंकाहै दर्शनजिसविषे तथा अनेक भूषणहैं जिसविषे तथा दिव्यअनेक उठाएहुएहैंआयुधजिसविषे ऐसेरूपकूं सोभगवान् दिखावताभया ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् अनेकहैंमुख तथानेत्र जिसरूपविषे ॥ तथा विस्मयकीप्राप्तिकरणेहारे अनेकवस्तुवोंकाहैदर्शन जिसरूपविषे ॥ तथा अनेकदिव्यभूषणहैं जिसरूपविषे ॥ तथा उठाएहुएहैंचक्रगदाआदिकदिव्यआयुधजिसस्वरूपविषे ॥ ऐसेस्वरूपकूं सोकृष्णभगवान् तिसअर्जुनकेतांई दिखावताभया इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) दिव्यमाल्यांबरधरंदिव्यगंधानुलेपनम् ॥ सर्वाश्चर्यमयंदेवमनंतंविश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥ दिव्यमाल्यांबरधरं । दिव्यगंधानुलेपनं । सर्वाश्चर्यमयं । देवम् । अनंतं । विश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेराजन् दिव्यमालातथावस्त्रधारणकरेहैं जिसनैं तथा दिव्यगंधवालेवस्तुवोंकाहैलेपनजिसविषे तथासर्वआश्चर्यमय तथाप्रकाशरूप तथाअपरिच्छिन्न तथा सर्वओरतैंहैंमुख जिसविषे ऐसेरूपकूं दिखावताभया ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् पुष्पमय तथारत्नमय ऐसीजेदिव्यमालाहैं ॥ तिनदिव्यमालावोंकूं धारणकऱ्याहैजिसनैं ॥ तथा पीतांबरादिकदिव्यवस्त्रोंकूं धारणकऱ्याहै जिसनैं ॥ तथा दिव्यगंधवालेकर्पूरचंदनादिकोंकाहैलेपन जिसविषे ॥ तथा सर्वाश्चर्यमयहै ॥ अर्थात् तेजबल वीर्यशक्ति रूप गुण अवयव अवस्थान इत्यादिक सर्वविशेषोंकरिकै अनेकअद्भुत रूपोंवालाहैं ॥ पुनःकैसाहैसोरूप देवहैं ॥ अर्थात् प्रकाशस्वरूपहै ॥ पुनःकैसाहैसोरूप अनंतहै ॥ अर्थात् देशकालवस्तुपरिच्छेद तैंरहितहै ॥ पुनः कैसाहैसोरूप विश्वतोमुखहै अर्थात् सर्वओरतैंहैंमुखजिसविषे ॥ ऐसेआपणेस्वरूपकूं श्रीभगवान् ताअर्जुनकेप्रति दिखावताभया ॥ इसप्रकारतैं पूर्वअष्टमेश्लोकविषेस्थित (दर्शयामास) इसपदकेसाथि इनदोनोंश्लोकोंका अन्वयकरणा ॥ अथवा अर्जुनोददर्श इसपदकाअध्याहारकरिकै इनदोनोंश्लोकोंका अन्वयकरणा ॥ अर्थात् ऐसेस्वरूपकूं सोअर्जुन देखताभया इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे तिसविश्वरूपका (देवं) यहविशेषण कथनकऱ्या था ॥ अब तिसिविशेषणका इसश्लोकविषे विस्तारतैंवर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) दिविसूर्यसहस्रस्यभवेद्युगपदुत्थिता ॥ यदिभाःसदृशीसास्याद्भासस्तस्यमहात्मनः ॥ १२ ॥ दिवि । सूर्यसहस्रस्य । भवेत् । युगपत् । उत्थिता । यदि । भाः । सदृशी । सा । स्यात् । भासः । तस्य । महात्मनः॥१२॥ (इतिप०) ॥ हेराजन् आकाशविषे एकहींकालमैं जेवी सहस्रसूर्यकी प्रभा उत्थितहुई होवै तवी साप्रभा तिस विश्वरूपकी प्रभाके तुल्य होवै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् आकाशविषे सहस्रसूर्यकी अर्थात् एकहींकालविषेउदयहुए अपरिमितसूर्योंकेसमूहकी एकहींकालविषे जोकदाचित् प्रभा उत्थित हुईहोवै है तौं साप्रभा तिसविश्वरूपकीप्रभाकेतुल्यहोवै ॥ अथवानहींभीतुल्यहोवै ॥ और मैंतौं यहमानताहूं ॥ तिनसूर्योंकीप्रभातैंभी ताविश्वरूपकीप्रभा अत्यंतउत्कृष्टहै॥ इसतैंपरेदूसरीकोईउपमाहैनहीं ॥ तहां एकहींकालविषे अपरिमितसूर्योंका उदयहोणाहीं संभवतानहीं ॥ यातैं यहउपमा अभूतउपमाहैं ॥ ताअभूतउपमाकरिकै यहअर्थ सूचनाकऱ्या ॥ सर्वप्रकारतैं ता विश्वरूपके प्रभाकीउपमासंभवतीनहीं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व (इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसचराचरम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति आपणे देहकेकिसिअवयवविषे सर्वजगत्केदेखणेकीआज्ञाकरीथी ॥ सोअर्जुन तिसअर्थकूंभी अनुभवकरताभया ॥ यहवार्ताभी संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) तत्रैकस्थंजगत्कृत्स्नंप्रविभक्तमनेकधा ॥ अपश्यद्देवदेवस्यशरीरेपांडवस्तदा ॥ १३ ॥ तत्र । एकस्थं । जगत् ।

कृत्स्नं । प्रविभक्तम् । अनेकधा । अपश्यत् । देवदेवस्य । शरीरे । पांडवः । तदा ॥१३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेराजन् तिसकाल विषे सोअर्जुन देवतावोंकरिकैपूज्यभगवान्के तिस विश्वरूपशरीरविषे किसीएकदेशविषेस्थित अनेकप्रकारकरिकै भिन्नभिन्न सर्व जगत्कूं देखताभया ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् जिसकालविषे श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति आश्चर्यमय विश्वरूप दिखाया ॥ तिसकालविषे सोअर्जुन इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकरिकै पूज्यभगवान्के तिसविश्वरूपशरीरविषे किसीएकअवयवविषे सर्वजगत्कूं देखताभया ॥ कैसाहैसोजगत् ॥ देव पितर मनुष्य इत्यादिकअनेकप्रकारोंकरिकै भिन्नभिन्नहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ हेधृतराष्ट्र इसप्रकार अद्भुतविश्वरूपकेदर्शनहुएभी सोअर्जुन भयकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ तथा तिसरूपकूंदेखिकै सोअर्जुन आपणेनेत्रोंकूंभी नहीं मूंदताभया ॥ तथा संभ्रमकेवशतैं सोअर्जुन तिसकालविषे अवश्यकर्त्तव्यअर्थकूं विस्मरणभीनहींकरताभया ॥ तथा भयभीतहोइकै सोअर्जुन तिसदेशतैं भागताभीनहींभया ॥ किंतु महान्‌चित्तक्षोभकेप्राप्तहुएभी अत्यंतधैर्यवालाहोणेतैं सो अर्जुन तिसकालविषे उचितव्यवहारकूंहीं करताभया ॥ यहसर्वअर्थ संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) ततःसविस्मयाविष्टोहृष्टरोमाधनंजयः ॥ प्रणम्यशिरसादेवंकृतांजलिरभाषत ॥ १४॥ ततः । सः । विस्मयाविष्टः । हृष्टरोमा । धनंजयः । प्रणम्य । शिरसा । देवं । कृतांजलिः । अभाषत॥१४॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र तिसतैं अनंतर विस्मयकरिकैव्याप्तहुआ तथापुलकितरोमांचवालाहुआ सो धनंजय तिसनारायणदेवकूं आपणेमस्तककरिकै नमस्कारकरिकै आपणे दोनोंहस्तजोडिकै यहवचनकहताभया॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् युधिष्ठिरराजाकेराजसूययज्ञवासतै सर्वराजोंकूंजीतिकै सोअर्जुन धनकूंलेआवताभयाहै ॥ यातैंताअर्जुनकूं धनंजयकहैहै ॥ तथा सोअर्जुन साक्षात् महादेवकेसाथिभी युद्धकरताभयाहै ॥ ऐसा अत्यंतप्रसिद्धपराक्रमवाला तथाअग्निकीन्यांई अत्यंततेजस्वी तथाअत्यंतधैर्यवान् सोअर्जुन तिसविश्वरूपकेदर्शनतैंअनंतर विस्मय करिकैआविष्टहुआ ॥ अर्थात् तिसअद्भुतरूपकेदर्शनतैंउत्पन्नभयाजो चित्तकाकोईअलौकिकचमत्काररूपविस्मयहै ताविस्मयकरिकै व्याप्तहुआ ॥ इसीकारणतैंहीं हृष्टरोमाहुआ ॥ अर्थात् ताविस्मयकरिकैं पुलकितहुएहैंसर्वशरीरकेरोमांचजिसके ॥ ऐसासोअर्जुन तिसविश्वरूपकेधारण करणेहारेनारायणदेवकूं भूमिविषेलगायेहुएआपणेमस्तककरिकै अत्यंतश्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरिकै तथाआपणेदोनोंहस्तोंकूंजोडिकै इसवक्ष्यमाणवचनकूं कह

ताभया इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान्नैं हमारेप्रति जोविश्वरूप दिखायाहै ॥ सोविश्वरूप यद्यपि सर्वलोकोंकरिकै देखणेकूंअशक्यहै तथापि श्रीभगवान्नैं प्राप्तकऱ्येहुएदिव्यचक्षुकरिकै मैंअर्जुन तिसविश्वरूपकूं प्रत्यक्षदेखताहूं ॥ यातैं हमारेकोई अहोभाग्यहैं ॥ इसप्रकार आपणेअनुभवकूंप्रगटकरताहुआ सोअर्जुन श्रीभगवान्केप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ पश्यामिदेवांस्तवदेवदेहेसर्वांस्तथाभूतविशेषसंघान् ॥ ब्रह्माणमीशंकमलासनस्थमृषींश्चसर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥ १५ ॥ पश्यामि । देवान् । तव । देव । देहे । सर्वान् । तथा । भूतविशेषसंघान् । ब्रह्माणम् । ईशं । कमलासनस्थम् । ऋषीन् । च । सर्वान् । उरगान् । च । दिव्यान् ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेदेव तुमारे ईसविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन सर्व देवतावोंकूं देखताहूं तथा स्थावरजंगमरूपभूतोंकेसमूहकूं देखताहूं तथा कमलरूपआसनविषेस्थित सर्वकेनियंता चतुर्मुखब्रह्माकूं देखताहूं तथा सर्व ऋषियोंकूं देखताहूं तथा दिव्य सर्पोंकूं देखताहूं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेविश्वरूपकेधारणकरणेहारे नारायणदेव ॥ तुमारेइसविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन वसु रुद्र आदित्य इत्यादिकसर्वदेवतावोंकूं देखताहूं ॥ अर्थात् इसदिव्यचक्षुजन्यज्ञानकाविषय करताहूं ॥ याप्रकारका (पश्यामि) इसशब्दकाअर्थ आगेभीसर्वपर्यायोंविषेजानिलेणा ॥ तथा इसतुमारेविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंकेसमूहकूंभी देखताहूं ॥ और सर्वभूतोंकानियंता जोचतुर्मुखब्रह्माहै ॥ जोब्रह्मा कमलरूपआसनविषेस्थितहै ॥ अर्थात् पृथिवीरूपकमलका कर्णिकारूपजोसुमेरुहै तासुमेरुरूपआसनविषेस्थितहै ॥ अथवा विष्णुभगवान्केनाभिकमलरूपआसनविषेस्थितहै ॥ ऐसेचतुर्मुखब्रह्माकूंभी मैंअर्जुन तुमारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखताहूं ॥ तथा वसिष्ठतैंआदिलैके जेब्रह्माकेपुत्ररूप नारदसनकादिकऋषिहैं तिनसर्वऋषियोंकूंभी मैं तुमारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखताहूं ॥ तथा इसलोकविषेअप्रसिद्ध जेवासुकीआदिकसर्पहैं तिनसर्पोंकूंभी मैंतुमारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखता हूं इति ॥ १५ ❀ ॥ तहां जिस भगवान्केविश्वरूपदेहविषे सोअर्जुन इनपूर्वउक्तसर्वपदार्थोंकूं देखताभयाहै ॥ तिसीविश्वरूपदेहकूं सोअर्जुन अब अनेकअद्भुतविशेषणोंकरिकै वर्णनकरेहै ॥

(मू० श्लो०)अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रंपश्यामित्वांसर्वतोनंतरूपम् ॥ नांतंनमध्यंनपुनस्तवादिंपश्यामिविश्वेश्वरविश्वरूप ॥ १६ ॥ अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं । पश्यामि । त्वां । सर्वतः । अनंतरूपं । न । अंतं । न । मध्यं । न । पुनः । तव । आदिं । पश्यामि । विश्वेश्वर । विश्वरूप ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेसर्वविश्वकाईश्वर हेसर्वविश्वरूप अनेकहैंबाहूउदरमुखनेत्रजिसविषे तथासर्व

॥१९४॥

वैत्र अनंतहैंरूपजिसके ऐसेतुमारेकूं मैंअर्जुन देखताहुं पुनः तुमारे अंतकूंभी मैं नहीं देखताहूं तथामध्यकूंभीनहीं देखताहूं तथा आदिकूंभी नहींदेखताहूं ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेसर्वविश्वकाईश्वर तथाहेसर्वविश्वरूप श्रीभगवान् ॥ अनेकहैंबाहुजिसविषे तथाअनेकहैंउदरजिसविषे तथाअनेकहैंमुखजिसविषे तथाअनेकहैंनेत्र जिसविषे ऐसेतुमारेविश्वरूपकूं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैदेखताहूं ॥ तथा सर्वत्रअनंतहैंरूपजिसके ऐसेतुमारेकूं मैं देखताहूं ॥ तथा तुमारे अवसानरूपअंतकूंभी मैं देखतानहीं ॥ तथा तुमारे मध्यकूंभी मैं देखतानहीं ॥ तथा तुमारे आदिकूंभी मैं देखतानहीं ॥ काहेतें जोपदार्थ देशकरिकै अथवा कालकरिकै परिच्छिन्न होवैहैं ॥ तिसपदार्थकाहीं आदि मध्य अंतहोवैहै ॥ और आपतौं सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे विद्यमानहो ॥ यातैं आपका सोआदिमध्यअंत संभवतानहीं ॥ ईहां (हेविश्वेश्वर हेविश्वरूप) यहजोदोसंबोधन भगवान्के अर्जुननैं कथनकरेहैं ॥ सो तिसकालविषे अतिसंभ्रमतैं कथनकरेहैं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन तिसीविश्वरूपभगवान्कूं अन्यप्रकारतैं अनेकविशेषणोंकरिकैयुक्तकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) किरीटिनंगदिनंचचक्रिणंचतेजोराशिंसर्वतोदीप्तिमंतम् ॥ पश्यामित्वांदुर्निरीक्ष्यंसमंताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥ १७ ॥

किरीटिनम् । गदिनम् । चक्रिणम् । च । तेजोराशिम् । सर्वतः । दीप्तिमंतम् । पश्यामि । त्वाम् । दुर्निरीक्ष्यम् । समंतात् । दीप्तानलार्कद्युतिम् । अप्रमेयम् ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् किरीटकूंधारणकरणेहारे तथागदाकूंधारणकरणेहारे तथाचक्रकूं धारणकरणेहारे तथा तेजकासमूहरूप तथासर्वओरतैं प्रकाशमान तथादेखणेकूंअशक्य तथाप्रकाशमानअग्निसूर्यकेप्रभाकीन्यांई प्रभावाले तथाअप्रमेय ऐसेतुमारेकूं मैंअर्जुन सर्वओरतैं देखताहूं ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् कैसाहैसोआपकाविश्वरूप ॥ मस्तकऊपरि मुकुटकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा हस्तोंविषे गदाकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा चक्रकूंधारण करणेहाराहै ॥ तथा सर्वओरतैं प्रकाशमानहै ॥ तथा सर्वतेजकासमूहरूपहै ॥ इसकारणतैंहीं दुर्निरीक्ष्यहै ॥ अर्थात् इसदिव्यचक्षुतैंविना देखणेकूंअशक्यहै ॥ ईहां (दुर्निरीक्ष्यम्) इसप्रकारकाजो मूलश्लोकविषेपाठहोवै ॥ तौं दुःख यहशब्द निषेधकावाचकजानणा ॥ अर्थात् सोआपकास्वरूप नहींदेख्याजावैहै ॥ पुनःकैसाहै सोविश्वरूप ॥ अत्यंतदीप्तिमान्जोअग्निसूर्यहैं ॥ तिनअग्निसूर्यदोनोंकेप्रभाकीन्यांईहै प्रभाजिसकी ॥ तथा अप्रमेयहै ॥ अर्थात् इसप्रकारका यहस्वरूपहै याप्रका रतैं निश्चयकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसेस्वरूपकूंधारणकरणेहारेतुमारेकूं सर्वओरतैं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैदेखताहूं ॥ यद्यपि (दुर्निरीक्ष्यम्) इसवचनकरिके

अर्जुननैं ताविश्वरूपकेदर्शनकानिषेध कथनकऱ्याथा ॥ और (पश्यामि) इसवचनकरिकै ताविश्वरूपकादर्शन कथनकऱ्याहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरवचनकाविरोध प्राप्तहोवैहै ॥ तथापि अधिकारीकेभेदतैं तेदोनोंवचन संभवैहैं ॥ तहां दिव्यचक्षुतैंरहितपुरुषकूंतौं सोविश्वरूपदेखणेकूं अशक्यहै ॥ और दिव्यचक्षुवालेपुरुषकूं सो विश्वरूप देखणेकूं शक्यहै इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ हेभगवन् बुद्धिमान्पुरुषोंकरिकैभी तर्कनाकरणेकूंअशक्य ऐसाजोतुमारा निरतिशयऐश्वर्यहै ॥ ताऐश्वर्यके दर्शनतैंमैंअर्जुन आपपरमेश्वरकूंइसप्रकारका मानताहूं ॥ इसवार्ताकूं अर्जुन कथनकरैहै ॥

(मू०श्लो०) त्वमक्षरंपरमंवेदितव्यंत्वमस्यविश्वस्यपरंनिधानम् ॥ त्वमव्ययःशाश्वतधर्मगोप्तासनातनस्त्वंपुरुषोमतोमे ॥ १८ ॥
त्वम् । अक्षरं । परमं । वेदितव्यं । त्वम् । अस्य । विश्वस्य । परं । निधानं । त्वम् । अव्ययः । शाश्वतधर्मगोप्ता । सनातनः । त्वं । पुरुषः । मतः । मे ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् आपहीं परम अक्षरहो तथाआपहीं जानणेयोग्यहो तथाआपहीं इस जगत्का परम आश्रयहो तथाआपहीं अव्ययहो तथाअनादिधर्मकापालकहो तथाआपहीं सनातन परमात्मापुरुष हमारेकूं संमतहो ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् । (एतद्वैतदक्षरंगार्गि ।) इत्यादिकश्रुतिनैं अक्षररूपकरिकैप्रतिपादनकऱ्याहुआ तथा । (अव्यक्तात्पुरुषःपरः) इत्यादिकश्रुतिनैं सर्वतैंपर रूपकरिकैप्रतिपादनकऱ्याहुआ जोनिर्गुणब्रह्महै ॥ सोनिर्गुणब्रह्मरूपभी आपहींहो ॥ जिसकारणतैं आप निर्गुणब्रह्मरूपहो ॥ इसकारणतैं आपहीं मुमुक्षुनैंनजौं वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकरिकै जानणेयोग्यहो ॥ तथा आपहीं इससर्वजगत्का परमआश्रयहो ॥ अर्थात् इससर्वकल्पितप्रपंचका अधिष्ठानरूपहो ॥ इसीकारण तैंहीं आप अव्ययहो ॥ अर्थात् नित्यहो ॥ तथा नित्यवेदकरिकैप्रतिपादितहोणेतैं शाश्वतरूपजोवर्णआश्रमकाधर्महै ताधर्मकेभी आपहीं पालनकरणेहारेहो ॥ अथवा (शाश्वत धर्मगोप्ता) यहदोपदजानणे ॥ तहां शाश्वत यहपदतौं श्रीभगवान्कासंबोधनहै ॥ अर्थात् हेशाश्वत हेनित्यरूप ॥ इसपक्षविषे (अव्ययः) इ सपदका विनाशतैंरहित यहअर्थकरणा ॥ इसीकारणतैंहीं जोसनातन परमात्मादेवरूपपुरुषहै ॥ सोपरमात्मापुरुषभीआपकूंहीं मैंमानताहूं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू०श्लो०) अनादिमध्यांतमनंतवीर्यमनंतबाहुंशशिसूर्यनेत्रम् ॥ पश्यामित्वांदीप्तहुताशवक्त्रंस्वतेजसाविश्वमिदंतपंतम् ॥ १९ ॥
अनादिमध्यांतम् । अनंतवीर्यम् । अनंतबाहुं । शशिसूर्यनेत्रम् । पश्यामि । त्वां । दीप्तहुताशवक्त्रम् । स्वतेजसा । विश्वम् । इदं । तपंतम् ॥१९॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् उत्पत्तिस्थितिनाशतैंरहित तथाअनंतहैप्रभावजिसका तथाअनंतहैंबाहुजिसकी तथाचंद्रमासू

येहैंनेत्र जिसके तथाप्रज्वलितअग्निहैमुखोंविषेजिसके तथाआपणेतेजकरिकै इस सर्वविश्वकूं तपायमानकरणेहारा ऐसेआपकेस्वरूपकूं मैंअर्जुन देखताहूं ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् पुनःसोआपकाविश्वरूपकैसाहै ॥ उत्पत्तितैंभीरहितहै ॥ तथा स्थितितैंभीरहितहै ॥ तथा विनाशतैंभीरहितहै ॥ तथा अपरिमितहै वीर्य क्या प्रभाव जिसका ॥ तथा अनंतहैंबाहुजिसकी ॥ ईहां (अनंतबाहुं) यहशब्द मुखादिकसर्वअवयवोंकीअनंतताका उपलक्षणहै ॥ तथा चंद्रमा सूर्य यहदोनोंहैंनेत्र जिसके ॥ तथा प्रज्वलितअग्निहैमुखजिसका ॥ अथवा प्रज्वलितअग्निहैमुखोंविषेजिसके ॥ तथा आपणेतेजकरिकै इससर्वजगत्कूं तपायमानकरणेहाराहै ॥ ऐसे तुमारेइसविश्वरूपकूं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैदेखताहूं इति ॥ १९ ॥ अब अर्जुन तिस भगवान्केविश्वरूपकी सर्वत्रव्यापकताकूं कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) द्यावापृथिव्योरिदमंतरंहिव्याप्तंत्वयैकेनदिशश्चसर्वाः ॥ दृष्ट्वाद्भुतंरूपमुग्रंतवेदंलोकत्रयंप्रव्यथितंमहात्मन् ॥ २० ॥

द्यावापृथिव्योः । इदम् । अंतरं । हि । व्याप्तं । त्वया । एकेन । दिशः । च । सर्वाः । दृष्ट्वा । अद्भुतं । रूपम् । उग्रं । तव । इदं । लोकत्रयं । प्रव्यथितं । महात्मन् ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहात्मन् तैं एकनैं हीं स्वर्गपृथिवीके मध्यमें यहअंतरिक्ष व्याप्तकन्याहै तथा सर्व दिशा व्याप्तकरीहैं तुमारे इस अद्भुत उग्र रूपकूं देखिकै तीननलोक अत्यंतभययुक्तहुएहैं ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहात्मन् अर्थात् हेसाधुपुरुषोंकूंअभयकीप्राप्तिकरणेहारा विश्वरूपभगवान् ॥ स्वर्ग पृथिवी इनदोनोंकेमध्यविषेस्थित जोयहअंतरिक्षलोकहै ॥ सोअंतरिक्ष तैंएकपरमेश्वरनैंहीं व्याप्तकन्याहै ॥ तथा पूर्वपश्चिमादिक सर्वदिशाभी तैं विश्वरूपनैंहीं व्याप्तकन्याहैं ॥ ईहां अंतरिक्षका तथादिशावोंका ग्रहण स्थावरजंगमरूपसर्वविश्वका उपलक्षणहै ॥ अर्थात् यहस्थावरजंगमरूपसर्वविश्व तैंविश्वरूपपरमेश्वरनैंहीं व्याप्तकन्याहै ॥ और जोवस्तु जिसनैं व्याप्तकरीताहै ॥ सो वस्तु तिसकास्वरूपहींहोवेहै ॥ जैसे मृत्तिकानैं व्याप्तकन्येहुए घटशरावादिककार्य मृत्तिकास्वरूपहींहोवेहैं ॥ तैसे तैंपरमेश्वरनैं व्याप्तकन्याहुआ यहसर्वविश्व तुमाराहींस्वरूपहै ॥ अर्थात् सर्वविश्वरूप तूंहींहै ॥ तहांश्रुति (ब्रह्मैवेदंसर्वम्) ॥ अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहींहै इति ॥ हेभगवन् तुमारे इसविश्वरूपकूंदेखिकै तीनलोक भयकरिकैं अत्यंतव्यथाकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अब ताविश्वरूपकेदर्शनविषे भयकीहेतुतासिद्धकरणेवासतै ताविश्वरूपके हेतुगर्भितदोविशेषणोंकूं अर्जुन कथनकरेहै (अद्भुतम् उग्रम् इति) हेभगवन् कैसाहैसोतुमाराविश्वरूप अद्भुतहै॥ अर्थात् आपणेदर्शनतैं अत्यंतविस्मयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ पुनःकैसाहै सोरूप

उयहै ॥ अर्थात् महान्तेजस्वीहोणेतैं अत्यंतदुःखकरिकेजान्याजावैहै ॥ यातैं हेभगवन् अबी इसआपकेविश्वरूपकूं अंतरधानकरौ इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ अब मैंपरमेश्वरहीं सर्वपृथिवीकेभारकासंहारकरणेहाराहूं याप्रकारतैं आपणेविषे सर्व पृथिवीकेभारकासंहारकरतापणेकूंप्रगटकरणेहारेभगवान्कूंदेखिकै सोअर्जुन कहेहै॥

(मू० श्लो०) अमीहित्वासुरसंघाविशंतिकेचिद्भीताःप्रांजलयोगृणंति ॥ स्वस्तीत्युक्त्वामहर्षिसिद्धसंघाःस्तुवंतित्वांस्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥ २१ ॥ अमी । हि । त्वां । सुरसंघाः । विशंति । केचित् । भीताः । प्रांजलयः । गृणंति । स्वस्ति । इति । उक्त्वा । महर्षिसिद्धसंघाः । स्तुवंति । त्वां । स्तुतिभिः । पुष्कलाभिः ॥२१॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् यह देवतावोंकेसमूह तुमारेप्रति हि प्रवेशकरेहैं तथाकइकपुरुष भयकूंप्राप्तहुए दोनोंहाथोंकूंजोडिके स्तुतिकरेहैं तथा महाऋषिसिद्धपुरुष इसजगत्कास्वास्तिहोवो इसप्रकारकावचन कहिकै तैंपरमेश्वरकी परिपूर्णअर्थकेबोधक वचनोंकरिकै स्तुतिकरेहैं ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ भगवन् पृथिवीकेभारकेउत्तारणेवासतै मनुष्यरूपकरिकैअवतारकूंप्राप्तहुए तथादुष्टजनोंकेविनाशकरणेवासतै युद्धकूंकरतेहुए जेयह वसु आदित्य इत्यादिकदेवतावोंकेसमूहहैं ॥ तेसर्वदेवगण तुमारेविषेहीं प्रवेशकरतेहुए हमारेकूं देखणेमैंआवैहैं ॥ ईहां (त्वा असुरसंघाः) याप्रकारका पदच्छेदकरिकै इसवचनका यहदूसराभीअर्थकरणा ॥ असुरोंकाअंशरूपहोणेतैं असुररूप जेयह दुर्योधनादिकहैं ॥ जेदुर्योधनादिरूपअसुरगण इसपृथिवीविषेभाररूपहै ॥ ऐसेदुर्योधनादिक असुरगण दुष्टअदृष्टोंकरिकैप्रेरणाकरेहुए आपणेमरणवासतै तुमारेविषे प्रवेशकरेहैं ॥ जैसे पतंग आपणेमरणवासतै अग्निविषे प्रवेशकरेहैं ॥ तथा दोनोंसैनावोंके मध्यविषे केईकपुरुष भीतहुए अर्थात् भागणेविषेभीअसमर्थहुए आपणेदोनोंहाथजोडिके दूरतैंहीं तुमारीस्तुतिकरेहैं ॥ इसप्रकारतैं महान्युद्धकेप्राप्तहुए उत्पातादिकोंकेनिमित्तोंकूंदेखिकै इससर्वविश्वका स्वस्तिहोवौ अर्थात् रक्षणहोवौ इसप्रकारकेवचनोंकूंकहिकै नारदादिकसर्वमहाऋषि तथाकपिलादिकसर्वसिद्ध युद्धकेदेखणेवासतै तहांआयेहुए सर्वविश्वकेविनाशकेनिवृत्तकरणेवासतै परिपूर्णअर्थकेबोधक तथागुणोंकीउत्कृष्टताकूंप्रतिपादनकरणेहारे ऐसेवचनोंकरिकै आपपरमेश्वरकी स्तुतिकूंकरेहैं इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) रुद्रादित्यावसवोयेचसाध्याविश्वेऽश्विनौमरुतश्चोष्मपाश्च ॥ गंधर्वयक्षासुरसिद्धसंघावीक्षंतेत्वांविस्मिताश्चैवसर्वे ॥ २२ ॥ रुद्रादित्याः । वसवः । ये । च । साध्याः । विश्वे । अश्विनौ । मरुतः । च । ऊष्मपाः । च । गंधर्वयक्षासुरसिद्धसंघाः । वीक्षंते । त्वाम् । विस्मिताः । च । एव । सर्वे ॥ २२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् जे रुद्रआदित्यहैं तथावसुहैं तथा

साध्यहैं तथाविश्वे देवहैं तथाअश्विनीकुमारहैं तथा मरुतहैं तथा ऊष्मपाहैं तथागंधर्वयक्षअसुरसिद्धोंकेसमूहहैं तेसर्व हीं तुमारेकूं देखतेहैं तथा विस्मयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् रुद्रहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा आदित्यहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा वसुहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा साध्यहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै॥ तथा विश्वहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा दोनों अश्विनी कुमारजोहैं ॥ तथा मरुतहैनामाजिनोंका ऐसेजे ओगणपंचास देवताविशेषहैं ॥ तथा ऊष्मपाहै नामाजिनोंका ऐसाजो पितरोंकासमूहहै ॥ जेपितर (ऊष्मभागाहि पितरः) इसश्रुतिविषे ऊष्मपानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तथा गंधर्वोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा यक्षोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा असुरोंकेजोसमूहहैं॥ तथा सिद्धोंकेजोसमूहहैं ॥ यहपूर्वउक्तसर्वहीं तैंविश्वरूपवालेपरमेश्वरकूं देखतेहैं ॥ तिसअद्भुतरूपकेदर्शनतैंअनंतर तेसर्वहीं विस्मयकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ २२ ॥ ❋ ॥ तहांपूर्व वीसमेंश्लोकविषे (लोकत्रयं प्रव्यथितंमहात्मन्) इसवचनकरिकै ताविश्वरूपकेदर्शनतैं तीनलोकोंकूं भयकीप्राप्ति कथनकरीथी॥ अब तिसपूर्वउक्तअर्थका उपसंहारकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) रूपंमहत्तेबहुवक्त्रनेत्रंमहाबाहोबहुबाहूरुपादम् ॥ बहूदरंबहुदंष्ट्राकरालंदृष्ट्वालोकाःप्रव्यथितास्तथाहम्॥ २३ ॥ रूपं । महत् । ते । बहुवक्त्रनेत्रं । महाबाहो । बहुबाहूरुपादं । बहुदरं । बहुदंष्ट्राकरालं । दृष्ट्वा । लोकाः । प्रव्यथिताः । तथा । अहम् ॥२३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहाबाहुवालेभगवन् अत्यंतमहान् तथाबहुतहैंमुखनेत्रजिसविषे तथाबहुतहैंबाहूऊरुपाद जिसविषे तथाबहुतहैंउदरंजिसविषे तथाबहुतदंष्ट्रावोंकरिकै अतिभयानक ऐसे तुमारे इसविश्वरूपकूं देखकै सर्वप्राणी तथा मैंअर्जुन व्यथाकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहान्भुजावालेविश्वरूपभगवान् ॥ तुमारे इसअद्भुतविश्वरूपकूंदेखिकै सर्वप्राणीभयकरिकै अतिव्यथाकुंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तथा मैंअर्जुनभी तारूपकूंदेखिकै भयकरिकै अतिव्यथाकूंप्राप्तहोताभयाहूं ॥ कैसाहैसोतुमारा विश्वरूप महत्है ॥ अर्थात् अत्यंतमहत्परिमाणवालाहै ॥ पुनःकैसाहैसोतुमारारूप ॥ बहुतहैं मुखजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंनेत्रजिसविषे ॥ तथाबहुतहैंभुजाजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंऊरुजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंपादजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंउदर जिसविषे ॥ तथा जोरूप बहुतदंष्ट्रावोंकरिकै अत्यंतभयानकहै ॥ ऐसेआपकेरूपकेदेखणेमात्रतैंहीं हमारेसहित सर्वप्राणी भयकरिकैपीडितहोतेभयेहैं इति ॥ २३ ॥ ❋ ॥ अब अर्जुन तापरमेश्वरके विश्वरूपविषे शोभायमानपणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) नभःस्पृशंदीप्तमनेकवर्णंव्यात्ताननंदीप्तविशालनेत्रम् ॥ दृष्ट्वाहि त्वांप्रव्यथितांतरात्माधृतिंनविंदामिशमंचविष्णो ॥२४॥ नभःस्पृशं । दीप्तम् । अनेकवर्णं । व्यात्ताननं । दीप्तविशालनेत्रं । दृष्ट्वा । हि । त्वां । प्रव्यथितांतरात्मा । धृतिं । न । विंदामि शमं । च । विष्णो ॥२४॥(इतिपदच्छेदः)॥हेविष्णुभगवन् संपूर्णआकाशविषेव्यापक तथाअत्यंतप्रज्वलित तथाअनेकहैंवर्णजिस विषे तथाविस्फारितहैंमुखजिसविषे तथाप्रज्वलितविशालहैंनेत्राजिसविषे ऐसेंतुमारेकूं देखके हीं व्यथाकूं प्राप्तहुआहै मनजिसका ऐसामैंअर्जुन धैर्यकूं तथा शमकूं नहीं प्राप्तहोताहूं ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेविष्णु अर्थात् हेसर्वत्रव्यापकभगवन् ॥ मैंअर्जुन तुमारेकूंदेखिके भयकरिकै केवल व्यथामात्रकूंहीं नहींप्राप्तभयाहूं ॥ किंतुभयकरिकैअत्यंतव्यथाकूं प्राप्तहुआहै अंतरात्मा क्या मन जिसका ऐसामैंअर्जुन तुमारेकूंदेखिकरिकैहीं धृतिकूंभी नहींप्राप्तहोताहूं ॥ अर्थात् देहइंद्रियादिकसंघातकेधारणकरणेका सामर्थ्यरूपधैर्यकूंभी नहींप्राप्तहोताहूं ॥ तथा मनकीस्थिरतारूपशमकूंभी नहींप्राप्तहोताहूं ॥ कैसाहैसोआपकास्वरूप ॥ इससंपूर्णआकाशरूपअंतरिक्षलोकविषे व्याप्तहोइरह्याहै अथवा आकाशकीन्यांई सर्वपदार्थोंकूं स्पर्शकरिरह्याहै ॥ पुनःकैसाहैसोआपकास्वरूप दीप्तहै ॥अर्थात् महान् अग्निकीन्यांई अत्यंतप्रज्वलितहै ॥ पुनः कैसाहैसोस्वरूप ॥ अनेकवर्णहै ॥ अर्थात् भयकीप्राप्तिकरणेहारेअनेकरूपोंकरिकैयुक्तहै ॥ पुनःकैसाहैसोस्वरूप ॥ विस्फारितहुएहैंमुखजिसविषे ॥ अर्थात् फाड्येहुएहैंमुखजिसनैं ॥ पुनःकैसाहैसोस्वरूप ॥ सूर्यमंडलकीन्यांई प्रज्वलित तथाविशाल हैंनेत्रजिसविषे ॥ ऐसेआपकेस्वरूपकूंदेखिकरिकैहीं भयकरिकै व्यथाकूंप्राप्तहुआहैमनाजिसका ऐसामैंअर्जुन धृतिकूं तथाशमकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ ईहां (हेविष्णो) इससंबोधनकरिकै अर्जुननैं विश्वरूपभगवान्कीव्यापकता कथनकरी ॥ ताकरिकै यहअर्थबोधनकऱ्या ॥ जिसकारणतैं आपाविश्वरूप सर्वत्रव्यापकहो ॥ तिसकारणतैं तुमारेकरिकैयुक्त भयानकदेशकूं परित्यागकरिकै मैंअर्जुन अन्यत्रजाणेविषेसमर्थनहींहूं ॥ यातैं यहभयानकविश्वरूप आपनैं अंतर्धानकऱ्याचाहीये इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ अब इसपूर्वउक्तअर्थकूंहीं पुनःदूसरे प्रकारतैं कथनकरताहुआ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रसन्नताकी प्रार्थना करेहै ॥

(मू०श्लो०) दंष्ट्राकरालानिचतेमुखानिदृष्ट्वैवकालानलसन्निभानि ॥ दिशोनजानेनलभेचशर्मप्रसीददेवेशजगन्निवास ॥ २५ ॥ दंष्ट्राकरालानि । च । ते । मुखानि । दृष्ट्वा । एव । कालानलसन्निभानि । दिशः । न । जाने । न । लभे । च । शर्म । प्रसीद । देवेश । जगन्निवास ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् दंष्ट्रावोंकरिकैभयंकर तथा प्रलयअग्निकेतुल्य तुमारे मुखोंकूं देखकरिकै हीं मैं

अर्जुन दिशावोंकूंभी नहीं जानताहूं तथा सुखकूंभी नहीं प्राप्तहोताहूं यातें हेदेवेश हेजगन्निवास हमारे ऊपरि प्रसन्नहोवो ॥ २५ ॥
(इतिपदार्थः) ॥

॥टीका॥हेभगवन् दंष्ट्रावोंकरिकैअत्यंतविकरालहोणेतैं भयकीप्राप्तिकरणेहारे तथाप्रलयकालके अग्निकेतुल्य ऐसेजेआपकेमुखहैं तिन आपकेमुखोंविषे यद्यपि मैंअर्जुन प्राप्तहुआनहीं॥ तथापि तिनआपकेमुखोंकूं केवलदेखिकरिकैंहीं भयकेवशतैं मैंअर्जुन पूर्व अपर इत्यादिकभेदकरिकै दिशावोंकूंभी जानतानहीं॥ इसी कारणतैंहीं मैंअर्जुन तुमारेदर्शनहुएभी सुखकूंप्राप्तहोतानहीं॥ यातैं हेदेवेश हेजगन्निवास आप हमारेऊपरि प्रसन्नहोवो॥ जिसकरिकैभयतैंरहितहोइके मैंअर्जुन तुमारेदर्शनजन्यसुखकूं प्राप्तहोवउ ॥ तहां अन्यकिसीकी नहींअपेक्षाकारिकै जोआपहींप्रकाशमानहोवै ताकानाम देवेशहै ॥ और आपणीसमीपतामात्रतैं जोसर्वकूं चेष्टाकरावै ताकानाम ईशहै ॥ जोदेवहोवै सोईहीं ईशहोवै ताकानाम देवेशहै ॥ अर्थात् स्वप्रकाशरूप सर्वकेप्रेरकककानाम देवेशहै॥ अथवा इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकाजोईशहोवै ताकानाम देवेशहै॥ और इससर्वजगत्का जोनिवासहोवै अर्थात् अधिष्ठानहोवै ताकानाम जगन्निवासहै इति॥ २५॥ ❀ ॥ तहांपूर्व इसएकादशेअध्यायके सप्तमेश्लोकविषे (ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सर्वदा हमारेजयकूं तथादुर्योधनादिकोंकेपराजयकूं देखणाहीं तुमारेकूंइष्टहै ॥ तिसजयपराजयकूंभी तूं इसहमारेदेहविषेहींदेख इति ॥ अब तिसआपणेजयकूं तथादुर्योधनादिकोंकेपराजयकूंभी मैंदेखताहूं इसअर्थकूं अर्जुन पांचश्लोकोंकरिकै कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) अमीचत्वांधृतराष्ट्रस्यपुत्राःसर्वेसहैवावनिपालसंघैः ॥ भीष्मोद्रोणःसूतपुत्रस्तथासौसहास्मदीयैरपियोधमुख्यैः ॥
॥ २६ ॥ वक्त्राणितेत्वरमाणाविशंतिदंष्ट्राकरालानिभयानकानि ॥ केचिद्विलग्नादशनांतरेषुसंदृश्यंतेचूर्णितैरुत्तमांगैः ॥ २७ ॥
अमी । च । त्वां । धृतराष्ट्रस्य । पुत्राः । सर्वे । सह । एव । अवनिपालसंघैः । भीष्मः । द्रोणः । सूतपुत्रः । तथा । असौ । सह । अस्मदीयैः । अपि । योधमुख्यैः ॥ वक्त्राणि । ते । त्वरमाणाः । विशंति । दंष्ट्राकरालानि । भयानकानि । केचित् । विलग्नाः । दशनांतरेषु । संदृश्यंते । चूर्णितैः । उत्तमांगैः ॥ २६॥२७॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेभगवन् पुनः यह धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिकपुत्र सर्व राजावोंकेसमूह सहित हीं अत्यंतशीघ्रतावालेहुएतैं परमेश्वरविषे प्रवेशकरेहैं तथाभीष्म तथाद्रोण तथा यह कर्ण यहतीनों हमारेसंबंधीरूपभी मुख्ययोधावों सहित तुमारेविषेप्रवेशकरेहैं हेभगवन् दंष्ट्रावोंकरिकैविकराल तथा अतिभयानक ऐसेतुमारे मुखोंविषे यहदु

योंधनादिकसर्व शीघ्रहीं प्रवेशकरेहैं तहां केईकयोधा चूर्णहुए शिरोंकरिकैविशिष्टहुए दांतोंकीमध्यसंधियोंविषे लग्येहुए देखणे मैंआवैं ॥ २६ ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् यह धृतराष्ट्रकेदुर्योधनादिकसर्वपुत्र शल्यराजातैंआदिलैके सर्वराजावोंसहितहीं अत्यंतशीघ्रतातैं तैंपरमेश्वरविषे प्रवेशकरतेहैं ॥ हेभगवन् केवल यहदुर्योधनादिकहीं तुमारेविषे प्रवेशनहींकरते ॥ किंतु सर्वलोकोंनैं अजेयतारूपकरिकैसंभावनाकऱ्याहुआ जोयह भीष्मपितामहहै तथाद्रोणाचार्यहै तथासर्वकालविषे हमाराद्वेषी जोयह सूतपुत्रकर्णहै ॥ यहतीनोंभी हमारेसंबंधीरूप धृष्टद्युम्नादिकमुख्ययोधावोंसहित तैंपरमेश्वरविषे प्रवेशकरेहैं ॥ अब तिसविश्वरूपभगवान्‌विषे तिनदुर्योधनादिकोंकेप्रवेशकाद्वार कथनकरेहं (वक्त्राणिइति) हेभगवन् जेआपकेमुख दंष्ट्रावोंकरिकैअत्यंतविकरालहैं ॥ याकारणतैंहीं तेमुख अत्यंतभयानकहैं ॥ ऐसेआपकेमुखोंविषेहीं यहदुर्योधनादिकसर्व अत्यंतशीघ्रतातैं प्रवेशकरेहैं ॥ तिनप्रवेशकरणेहाऱ्योंविषेभी केईकयोधातौ चूर्णभावकूंप्राप्तहुए मस्तकोंकरिकैयुक्तहुए आपकेदांतोंकेमध्यसंधियोंविषे लग्येहुए हमनै देखीतेहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ इनदोनोंश्लोकोंकेपदोंकी (अमीधृतराष्ट्रस्यपुत्राः त्वांविशंति भीष्मद्रोणादयःतेवक्त्राणिविशंति) याप्रकारतैंयोजनाकरिकै यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ धृतराष्ट्रके अत्यंतपापिष्ठ जेदुर्योधनादिकपुत्रहैं ॥ तेदुर्योधनादिकपापिष्ठतौं तीनलोकरूपशरीरवालेआपपरमेश्वरविषेहीं प्रवेशकरेहैं ॥ अर्थात् तेदुर्योधनादिकआपणेपापकर्मकेअनुसार तैंविश्वरूपभगवान्‌केपायुस्थानविषे स्थितनरकोंकूंहीं प्राप्तहोवेहैं ॥ और यहभीष्मद्रोणादिकतौं आपपरमेश्वरकेभक्तहैं ॥ यातैं ॥ यहभीष्मादिकतौं आपपरमेश्वरके जिनमुखोंतैं अग्नि ब्राह्मण देवता उत्पन्नहुएहैं ॥ तिनमुखोंविषेहीं प्रवेशकरेहैं ॥ इसप्रकार दुर्योधनादिकोंके तथाभीष्मादिकोंके गतिकीविलक्षणताकेबोधनकरणेवासतै इसप्रकारतैंपदोंकाअन्वयकरणा युक्तहै ॥ इति ॥ २६ ॥ २७ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे दुर्योधनादिकसर्वराजावोंका भगवान्‌केमुखोंविषेप्रवेश कथनकऱ्या ॥ सोप्रवेश दोप्रकारकाहोवेहै ॥ एकप्रवेशतौं अबुद्धिपूर्वक होवैहै ॥ दूसराप्रवेश बुद्धिपूर्वक होवैहै ॥ तहां नजानिकैजोप्रवेशहै ताकूं अबुद्धिपूर्वकप्रवेशकहेहैं ॥ और जानिकेजोप्रवेशहै ताकूं बुद्धिपूर्वकप्रवेशकहेहैं ॥ तहां भगवान्‌केमुखोंविषे तिनराजावोंके अबुद्धिपूर्वकप्रवेशविषे अर्जुन दृष्टांतकूंकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यथानदीनांबहवोंबुवेगाःसमुद्रमेवाभिमुखाद्रवंति ॥ तथा तवामीनरलोकवीराविशंतिवक्त्राण्यभितोज्वलंति ॥२८॥

यथा । नदीनां । बहवः । अंबुवेगाः । समुद्रम् । एव । अभिमुखाः । द्रवंति । तथा । तव । अमी । नरलोकवीराः । विशंति । वक्त्राणि । अभितः । ज्वलंति ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभगवन् जैसे नदीयोंके बहुत जलोंकेवेग समुद्रकेअभिमुखहुए समुद्रकूं हीं प्रवेश करेहैं तैसें यह मनुष्यलोककेवीर तुमारे सर्वओरतें प्रकाशमान मुखोंकूंहीं प्रवेशकरेहै ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जैसे अनेकमार्गोविषेप्रवृत्तहुई जेश्रीगंगायमुनादिकनदीयांहै तिननदीयोंके जेबहुतजलोंकेवेगहैं अर्थात् जिनजलोंके जेवेगवालेप्रवाहहैं ॥ तेबहुतजलोंकेप्रवाह समुद्रकेअभिमुखहुए तिससमुद्रविषेहीं अबुद्धिपूर्वक प्रवेशकरेहैं ॥ तैसे इसमनुष्यलोकविषेशूरवीरजेदुर्योधनादिकराजेहैं ॥ तेयहदुर्योधनादिकराजे तैंपरमेश्वरके सर्वओरतैंप्रकाशमानमुखोंविषे अबुद्धिपूर्वक प्रवेशकरेहैं ॥ तहां कितनैंकीपुस्तकोंविषे (अभितोज्वलंति) इसवचनकेस्थानविषे (अभिविज्वलंति) याप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ इसप्रकारकेपाठहुएभी सोपूर्वउक्तअर्थहींजानणा इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ अबश्रीविश्वरूपभगवान्‌केमुखोंविषे तिनराजावोंके बुद्धिपूर्वकप्रवेशविषें अर्जुन दृष्टांतकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यथाप्रदीप्तंज्वलनंपतंगाविशंतिनाशायसमृद्धवेगाः ॥ तथैवनाशायविशंतिलोकास्तवापिवक्त्राणिसमृद्धवेगाः ॥ २९ ॥

यथा । प्रदीप्तं । ज्वलनं । पतंगाः । विशंति । नाशाय । समृद्धवेगाः । तथा । एव । नाशाय । विशंति । लोकाः । तव । अपि । वक्त्राणि । समृद्धवेगाः ॥२९॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् जैसे पतंग अत्यंतवेगवालेहुए आपणेनाशवासतै प्रज्वलित अग्निविषे प्रवेशकरेहै तैसें हीं यहदुर्योधनादिक भी अत्यंतवेगवालेहुए आपणेनाशवासतैं तुमारे मुखोंविषे प्रवेशकरेहै ॥२९॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जैसे पतंग अत्यंतवेगवालेहुए आपणेमरणवासते प्रज्वलितअग्निविषे बुद्धिपूर्वक प्रवेशकरेहैं ॥ तैसे यहदुर्योधनादिकसर्वराजेभी अत्यंतवेगवालेहुए आपणेमरणवासतैं तैंपरमेश्वरकेमुखोंविषे बुद्धिपूर्वक प्रवेशकरेहैं इति ॥ २९ ❀ ॥ तहांपूर्व युद्धकीकामनावालेराजावोंका भगवान्‌केमुखोंविषे प्रवेशकाप्रकार कथनकऱ्या ॥ अबतिसप्रवेशकालविषे श्रीभगवान्‌केप्रवृत्तिकेप्रकारकूं तथाभगवान्‌केदीप्तिरूपप्रकाशकेप्रवृत्तिकेप्रकारकूं अर्जुन कहेहै ॥

(मू० श्लो०) लेलिह्यसेग्रसमानःसमंताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ॥ तेजोभिरापूर्यजगत्समग्रंभासस्तवोग्राःप्रतपंतिविष्णो ॥ ३० ॥

लेलिह्यसे । ग्रसमानः । समंतात् । लोकान् । समग्रान् । वदनैः । ज्वलद्भिः । तेजोभिः । आपूर्य । जगत् । समग्रम् । भासः । तव । उग्राः । प्रतपंति । विष्णो ॥ ३० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेविष्णुभगवान् संपूर्ण लोकोंकूं ग्रासकरताहुआतूं आपणे प्रज्वलित मुखोंकरिकै सर्वओरतैं आस्वादनकरताहै इससमग्र जगत्‌कूं आपणीदीप्तियोंकरिकै सर्व ओरतैंपूर्णकरिकै याकारणतैं तुमारी तेउग्र दीप्तियां संतापकूंउत्पन्नकरेहैं ॥ ३० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेविष्णु अर्थात् हेसर्वत्रव्यापकविश्वरूपभगवान् इसप्रकार अत्यंतवेगकरिकै तुमारेमुखविषेप्रवेशकरतेहुए जेदुर्योधनादिकसर्वराजेहैं ॥ तिनसर्वराजा

वोंकूं तूं ग्रासकरताहुआ अर्थात् तिनआपणेमुखोंद्वारा आपणेउदरविषेप्रवेशकरावताहुआ तिनआपणेप्रज्वलितमुखोंकरिकै सर्वओरतैंआस्वादनकरेहैं ॥ अर्थात् जैसे यहमनुष्य कोईस्वादुवस्तुकूंभक्षणकरिकै आपणीजिव्हाकरिकै तालुओष्ठादिकोंकूंचाटैहैं ॥ तैसे तूंपरमेश्वरभी तिनदुर्योधनादिकराजावोंकूंभक्षणकरिकै आपणी जिव्हाकरिकै तालुओष्ठादिकोंकूंचाटैहैं ॥ क्याकरिकै ॥ आपणेदीप्तिरूपतेजोंकरिकै इससमग्रजगत्कूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरिकै ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं तूं आपणीदीप्तियोंकरिकै इससर्वजगत्कूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरेहैं ॥ तिसकारणतैं तेतुमारी अत्यंततीव्र दीप्तियां प्रज्वलितअग्निकीन्यांई संतापकूंउत्पन्नकरेहैं इति ॥ ॥ ३० ॥ ❀ ॥ इसप्रकार तिनभगवान्कीदीप्तियोंकरिकै व्याकुलहुआअर्जुन यहसाक्षात्परिपूर्णभगवान्है याप्रकारतैं भगवान्केस्वरूपकानहींस्मरणकरिकै भगवान्केप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) आख्याहिमेकोभवानुग्ररूपोनमोस्तुतेदेववरप्रसीद ॥ विज्ञातुमिच्छामिभवंतमाद्यंनहिप्रजानामितवप्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥
आख्याहि[5] । मे[4] । कः[3] । भवान्[2] । उग्ररूपः[1] । नमः[8] । अस्तु[9] । ते[7] । देववर[6] । प्रसीद[10] । विज्ञातुम्[13] । इच्छामि[14] । भवंतम्[12] । आद्यम्[11] । न[18] । हि[15] । प्रजानामि[19] । तव[16] । प्रवृत्तिम्[17] ॥ ३१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् ऐसेउग्ररूपवाले[1] आप[2] कौन[3]हो यहवार्त्ता हमारे[4] तांई कथनकरौ[5] हेसर्वदेवतावोंविषेश्रेष्ठ[6] तुमारेतांई[7] हमारा नमस्कार[8] होवेउ[9] आप प्रसन्नहोवौ[10] मैंअर्जुन सर्वकेकारणरूप[11] तुमारेकूं[12] जानणेकी[13] इच्छाकरताहूं[14] जिसकारणतैं[15] तुमारी[16] चेष्टाकूं[17] मैं नहीं[18] जानताहूं[19] ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ उग्रहै क्या अत्यंतक्रूरहै रूप क्या आकार जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा प्रलयकालविषे सर्वजगत्कासंहारकरणेहाराजोरुद्रहै ताकानाम उग्रहै ॥ ताउग्रकेरूपकीन्यांईहै रूप क्या आकार जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा उग्रहै क्या सर्वलोकोंकूंभयकीप्राप्तिकरणेहाराहै रूपजिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा उग्रहै क्या क्रूरहै रूप क्या कर्म जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ ऐसे उग्ररूपवाले आप कौनहो ॥ अर्थात् प्रलयकालकेरुद्रहो ॥ अथवा प्रलयकालकीअग्निहो ॥ अथवा महान्मृत्युहो॥अथवा कालांतकहो॥अथवा परमपुरुषहो ॥ अथवा इनसर्वोंतैंकोईअन्यहो ॥ जोअबी आपकास्वरूप है ॥ सोस्वरूप मैंअर्जुनकेतांई आप कृपाकरिकै कथनकरौ ॥ याकारणतैंही मैंअर्जुनका आपसर्वजगत्केगुरुरूपपरमेश्वरकेतांई नमस्कारहोवै ॥ हेसर्वदेवतावों विषेश्रेष्ठभगवान् आप हमारेऊपरि प्रसादकरौ ॥ अर्थात् क्रूरताकापरित्यागकरिकै प्रसन्नहोवौ हेभगवन् सर्वजगत्काकारणरूपजोआपहो ॥ तिसकारणरूपआप परमेश्वरकूं मैंअर्जुन विशेषरूपतैं जानणेकीइच्छाकरताहूं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकास्वरूपतौं हमारीचेष्टाकेदर्शनतैंही जानणेकूंशक्यहै ॥ यातैं (कोभवा

नू) यहतुमाराप्रश्न संभावतानहीं ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुन कहेहै (नहिप्रजानामिइति) हेभगवन् जिसकारणतैं मैंअर्जुन आप परमेश्वरकासखाहुआ भी आपकीचेष्टारूपप्रवृत्तिकूंभी जानतानहीं ॥ इसकारणतैं आपहीं आपकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरौ इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अर्जुनकरिकैप्रार्थना कऱ्याहुआ श्रीभगवान् जोआपणास्वरूपहैं तथाजिसकार्यकेकरणेवासतै आपणीप्रवृत्तिहै यहसर्ववार्त्तातीनश्लोकोंकरिकै अर्जुनकेप्रति कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच॥कालोस्मिलोकक्षयकृत्प्रवृद्धोलोकान्समाहर्तुमिहप्रवृत्तः॥ ऋतेपित्वानभविष्यंतिसर्वेयेवस्थिताःप्रत्यनीकेषुयोधाः ॥ ३२॥ कालः । अस्मि । लोकक्षयकृत् । प्रवृद्धः । लोकान् । समाहर्त्तुम् । इह । प्रवृत्तः । ऋते । अपि । त्वा । न । भविष्यंति । सर्वे । ये । अवस्थिताः । प्रत्यनीकेषु । योधाः ॥३२॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सर्वलोकोंकासंहारकर्त्ता तथा अत्यंत वृद्धिकूंप्राप्तहुआ कालरूपपरमेश्वर मैंहूं तथाइसकालविषैदुर्योधनादिकोंकूं भक्षणकरणेवासतै प्रवृत्तहुआहूं यातैं प्रतिपक्षीयोंकी सेनावोंविषे जे योधा स्थितहैं तेसर्वयोधा तुमारे युद्धरूप व्यापारतैं विना भी नहीं विद्यमानहोवैंगे ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन भूमिविषेभाररूपजेप्राणीहै ॥ तिनदुष्टप्राणीयोंकेनाशकरणेहारा अथवा प्रलयकालविषे सर्वप्राणीयोंकेनाशकरणेहारा तथामहान्वृद्धिकूंप्राप्तहुआ क्रियाशक्तिउपहितकालरूपपरमेश्वर मैं हुं ॥ इसप्रकार आपणे स्वरूपकूंकथनकरिकै श्रीभगवान् आपणीप्रवृत्तिकूं कथनकरेहै (लोकान्इति) हेअर्जुन जिसकार्यकेकरणेवासतै मैंभगवान् अबीप्रवृत्तहुआहुं ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर ॥ भूमिविषेभाररूपजेदुर्योधनादिकलोकोंकूं भक्षणकरणेवासतै इसलोकविषे मैं प्रवृत्तहुआहुं ॥ शंका ॥ हेभगवन् मैंअर्जुनकीप्रवृत्तितैंविना आप इनदुर्योधनादिकोंकूं कैसे नाशकरौंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (ऋतेपित्वाइति) हेअर्जुन तुमारेतैंविनाभी अर्थात् तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंविनाभी केवलमैंपरमेश्वरकेव्यापारमात्रकरिकैहीं यहभीष्मद्रोणकर्णादिकसर्वयोधानाशकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ तथा इसदुर्योधनकीसेनाविषे इनभीष्मद्रोणादिकोंतैंभिन्न दूसरेभी जितनैंकीयोधास्थितहैं ॥ तेसर्वहींयोधा मैंपरमेश्वरनैंहीं हननकरीराख्येहैं ॥ यातैं तिनोंकेहननकरणेविषे तैंअर्जुनके युद्धरूपव्यापारका कोईअत्यंत जरूरनहींहै ॥ तुमारेव्यापारतैंविनाहीं यहदुर्योधनादिकसर्व नाशहोवैंगे इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् हमारे युद्धरूपव्यापारतैंविनाहीं जोकदाचित् यहदुर्योधनादिक नाशहोतेहोवैं ॥ तौं आप वारंवार हमारेकूं युद्धकरणेविषे किसवासतै प्रवृत्तकरतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) तस्मात्त्वमुत्तिष्ठयशोलभस्वजित्वाशत्रून्भुंक्ष्वराज्यंसमृद्धम् ॥ मयैवैतेनिहताःपूर्वमेवनिमित्तमात्रंभवसव्यसाचिन् ॥
॥३३॥ तस्मात् । त्वम् । उत्तिष्ठ । यशः । लभस्व । जित्वा । शत्रून् । भुंक्ष्व । राज्यं । समृद्धं । मया । एव । एते । निहताः । पूर्वम् ।
एव । निमित्तमात्रं । भव । सव्यसाचिन् ॥ ३३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिसकारणतें तूं युद्धवासतैउद्यमवालाहोउ तथा
यशकूं प्राप्तहोउ तथाशत्रुवोंकूं जिंतके निष्कंटक राज्यकूं भोगं हेसव्यसाचिन् यहतुमारेशत्रु तुमारेयुद्धतेंपूर्व हीं मैंपरमेश्वरनें हीं
हननकरिछोडेहैं तूंकेवल निमित्तमात्र होउ ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंविनाभी यहभीष्मद्रोणादिक अवश्यकरिकै नाशकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ तिसकारणतैं तूंअर्जुन अबी युद्धकरणे वासतै उद्यमवालाहोउ ॥ तायुद्धविषे इनभीष्मद्रोणादिकोंकूंहननकरिकै तूं यशकूंप्राप्तहोउ ॥ अर्थात् जेभीष्मद्रोणादिक इंद्रादिकदेवतावोंकरिकैभी दुर्जयथे ॥ तेभीष्मद्रोणादिकअतिरथी इसअर्जुननैं शीघ्रहीं जयकरिलीये ॥ याप्रकारकेयशकूंहीं तूं प्राप्तहोउ ॥ जिसकारणतैं इसप्रकारकायश महान्पुण्यकर्मोंकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकारणतैं ऐसेयशकीप्राप्तिवासतैं तूं इसयुद्धविषेप्रवृत्तहोउ ॥ अर्थात् तुमारेकूंइसप्रकारकेमहान्यशकीप्राप्तिकरणेवासतैहीं मैंभगवान् तुमारेकूं इसयुद्धविषेप्रवृत्तकरताहूं ॥ कोई तुमारेयुद्धतैंविना यहभीष्मद्रोणादिक नहींनाशहोवैंगे इसवासतै मैं तुमारेकूं युद्धविषेप्रवृत्त करतानहीं ॥ हेअर्जुन इनशत्रुवों केमारणेकरिकै तुमारेकूं केवल यशकीहींप्राप्तिनहींहोवैंगी ॥ किंतु इनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकूं विनाहींप्रयत्नतैं जयकरिकैसर्वऐश्वर्यसंपन्न निष्कंटकराज्यकूंभी तूं भोग ॥ शंका ॥ हेभगवन् इनभीष्मद्रोणादिकअतिरथीयोधावोंकेविद्यमानहुए तिनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकाजयकरणा अत्यंतदुर्लभहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके निवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान्कहेहै (मयैवैतेइति) हेअर्जुन तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंपूर्वहीं यहभीष्मद्रोणादिक कालरूपमैंपरमेश्वरनैंहीं आयुषतैंरहितकरिराख्येहैं केवल तुमारेकूं लोकविषेयशकीप्राप्तिकरणेवासतै यहभीष्मद्रोणादिकसर्वयोधा हमनैं रथतैंनीचैगिडायेनहीं ॥ यातैं हेसव्यसाचिन् तूं केवल निमित्तमात्रहोउ ॥ अर्थात् यहभीष्मद्रोणादिकयोधा अर्जुननैंहीं जयकरेहैं याप्रकारके सर्वलोकोंकेवचनोंका आस्पदहोउ ॥ तहां वामहस्तकरिकैभी शरोंकेचलावणेकास्वभाव जिसकाहोवै ताकानाम सव्यसाचिन्है ॥ तात्पर्ययह ॥ ऐसेमहान्पराक्रमवाले तैंअर्जुनकूं इनभीष्मद्रोणादिकोंकाजयकरणा कोईअसंभावितनहींहै ॥ किंतु संभवताहींहै ॥ यातैं तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंअनंतर मैंपरमेश्वर इनभीष्मद्रोणादिकोंकूं रथतैंनीचेगेडांगा ॥ तिसकूंदेखिकै सर्वलोक ऐसीकल्पनाकरैंगे ॥ इसअर्जुननैंहीं इनभीष्मद्रोणादिकोंकूंहननकऱ्याहै इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थित जोद्रोणाचार्यहै ॥ सोद्रोणा

चार्य कैसाहै ॥ सर्वब्राह्मणोंविषे उत्तमब्राह्मणहै ॥ तथा धनुर्वेदकाआचार्यहै ॥ तथा हमसर्वोंकागुरुहै ॥ तथा दिव्यअस्त्रकरिकैसंपन्नहै ॥ और इसदुर्योधनकी सेनाविषेस्थितजोभीष्मपितामहहै ॥ सोभीष्मपितामह कैसाहै ॥ आपणीइच्छातैंमरणेहाराहै ॥ तथा दिव्यअस्त्रकरिकैसंपन्नहै ॥ जिसभीष्मपितामहकूं परशुराम नैंभीपराजयकन्यानहीं ॥ और इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थितजो जयद्रथहै ॥ सोजयद्रथ कैसाहै ॥ जिसजयद्रथका वृद्धक्षत्रनामापिता जो योधा इसहमारेपुत्र काशिर भूमिविषेगेडैंगा तिसयोधाकाभीशिर तिसीकालविषे भूमिविषेगिडैंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै तपकूंकरताभयाहै ॥ तथा जोजयद्रथ आपभी सर्वदा महादेवकेआराधनपरायणहै ॥ तथा दिव्यअस्त्रकरिकैसंपन्नहै ॥ ऐसा जयद्रथराजाभी जीतणेकूंअशक्यहै ॥ और इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थितजोकर्णहै ॥ सो कर्णकैसाहै ॥ साक्षात्सूर्यकेसमानहै ॥ तथा सूर्यभगवान्केआराधनकरिकै प्राप्तहुआहैदिव्यअस्त्रजिसकूं ॥ तथा इंद्रनैंदईहुई जाएकपुरुषकेनाशकरणेहारी तथा व्यर्थकरणेकूंअशक्य ऐसीशक्तिहै ताशक्तिकरिकैयुक्तहै ॥ इनोंतैंआदिलैके दूसरेभी कृपाचार्य अश्वत्थामा भूरिश्रवा इत्यादिकजेमहान्प्रभाववालेयोधाहैं ॥ तेसर्वयोधा सर्वप्रकारतैं दुर्जयहींहैं ॥ ऐसेभीष्मद्रोणादिकमहान्योधावोंकेविद्यमानहुए मैंअर्जुन इनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकूंजीतिकै निष्कंटकराज्यकूं कैसेभोगौंगा ॥ तथा यशकूंकैसेप्राप्तहोवौंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् ताशंकाकेविषयभूतयोधावोंकूं स्वस्ववाचकनामोंकरिकैकथनकरताहुआ कहेहै ॥

(मू० श्लो०) द्रोणंचभीष्मंचजयद्रथंचकर्णंतथान्यानपियोधवीरान्॥मयाहतांस्त्वंजहिमाव्यथिष्ठायुध्यस्वजेतासिरणेसपत्नान्॥३४॥

द्रोणम् । च । भीष्मम् । च । जयद्रथम् । च । कर्णम् । तथा । अन्यान् । अपि । योधवीरान् । मया । हतान् । त्वम् । जहि । मा । व्यथिष्ठाः । युध्यस्व । जेतासि । रणे । सपत्नान् ॥ ३४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन द्रोणाचार्यकूं तथा भीष्मपितामहकूं तथा जयद्रथकूं तथा कर्णकूं तथा इनोंतैंअन्य भी योधावोंकूं जेयोधा मैंपरमेश्वरनैंही हननकरिराख्येहैं तिनसर्वयोधावोंकूं तूं अर्जुन हननकर तूं मत व्यथाकूंप्राप्तहोउ तथायुद्धकूंकर इससंग्रामविषे शत्रुवोंकूं तूं अवश्य जीतैंगा ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन द्रोणाचार्य तथाभीष्मपितामह तथाजयद्रथ तथाकर्ण तथाइनोंतैंभिन्न दूसरेभी जितनैंकी महान्योधाहैं ॥ जेभीष्मादिकसर्वयोधा यहभी ष्मादिक कैसेजयहोंवैंगे याप्रकारकी तुमारीशंकाकेविषयभूतहैं ॥ तेभीष्मद्रोणादिकसर्वयोधा कालरूपमैंपरमेश्वरनैं तुमारेयुद्धतैंपूर्वहीं हननकरिराख्येहैं ॥ ऐसेभीष्म द्रोणादिकयोधावोंकूं तूं अर्जुन अबीहननकर ॥ पूर्वहननकीयेहुएयोधावोंकेहननकरणेविषे तुमारेकूं कौनपरिश्रमहोवैगा ॥ किंतु तिनोंकेहननकरणेविषे तुमारेकूं कोई भीपरिश्रमहोवैगानहीं ॥ यातैं तूं व्यथाकूं मतप्राप्तहोउ ॥ अर्थात् यहभीष्मद्रोणादिकमहान्योधा कैसेहननकीयेजावैंगे इसप्रकारकी भयनिमित्तकपीडारूपव्यथाकूं

तूं मतभ्रांतहोउ ॥ हेअर्जुन तिसभयकूंपरित्यागकरिकै तूंयुद्धकूंकर ॥ इसप्रकार भयकापरित्यागकरिकै जबी तूं युद्धकूंकरैंगा ॥ तबी इससंग्रामविषे थोडेहींका लमैं इनदुर्योधनादिकसर्वशत्रुवोंकूं जीतैंगा ॥ तात्पर्ययह ॥ इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थित जितनैंकीभीष्मादिकयोधाहैं ॥ तिनयोधावोंविषे किसीयोधातैं आपणे पराजयकीशंकाकूं तूंमतकर ॥ तथा किसीभीयोधाकेहननकरणेजन्य पापकीशंकाकूं तूंमतकर इति ॥ ३४ ॥ तहांदुर्योधनकेजयहोणेकीआशाकोविषयभूत जे द्रोणा चार्य तथाभीष्मपितामह तथाजयद्रथ तथाकर्ण यहच्यारियोधाहै ॥ तिनच्यारोंकेहननहुएतैंअनंतर निराश्रयहुएदुर्योधनकाभी हननहींहोवैंगा इसप्रकारकाविचारक रिकै यहधृतराष्ट्र आपणेजयकीआशाकापरित्यागकरिकै जबी इनपांडवोंकेसाथि मित्रभावकरिकै युद्धतैंनिवृत्तिहोवैंगा तबीपांडवोंकी तथाकौरवोंकीदोनोंकीहीं शांतिहोवैंगी ॥ इसप्रकारकेअभिप्रायवालासंजय तिसतैंअनंतर क्यावृत्तांतहोताभया ऐसी धृतराष्ट्रकीजिज्ञासाकेहुए कहेहै ॥

(मू० श्लो०) संजयउवाच ॥ एतच्छ्रुत्वावचनंकेशवस्यकृतांजलिर्वेपमानःकिरीटी ॥ नमस्कृत्वाभूयएवाहकृष्णंसगद्गदंभीतभीतः प्रणम्य ॥ ३५ ॥ एतत् । श्रुत्वा । वचनं । केशवस्य । कृतांजलिः । वेपमानः । किरीटी । नमस्कृत्वा । भूयः । एव । आह । कृष्णं सगद्गदं । भीतभीतः । प्रणम्य । (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र श्रीभगवान्के इसपूर्वउक्त वचनकूं श्रवणकरिकै जोडेहैं दोनोहस्त जिसनैं तथाकंपायमानहुआ तथाअत्यंतभययुक्तहुआ सोअर्जुन श्रीकृष्णभगवान्कूं नमस्कारकरिकै तथाअत्यंतनम्रहोइकै सगद्गद जैसेहोवै तैसेपुनः भी कहताभया ॥ ३५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र श्रीभगवानके इसपूर्वउक्तवचनकूंश्रवणकरिकै सोकिरीटीअर्जुन अर्थात् इंद्रनैंदीयाहैकिरीटजिसकूं ऐसापरमवीररूपकरिकै प्रसिद्धअर्जुन कंपायमानहुआ अर्थात् परमआश्चर्यकेदर्शनजन्यसंभ्रमकरिकै कंपायमान हुआसोअर्जुन श्रीकृष्णभगवानकूं नमस्कारकरिकै सगद्गदजैसेहोवै तैसे पुनःभी कहता भया ॥ तहां भयकरिकै अथवा हर्षकरिकै निकस्याहूआजोअश्रुजलहै ताअश्रुवोंकरिकैनेत्रोंकेपूर्णहुए तथाकफकरिकै अवरुद्धहुएकंठपणे करिकै जेवाणीके मंदपणा तथासकंपपणा इत्यादिकविकारहैं ताकानाम सगद्गदहै॥ऐसे सगद्गदकरिकैयुक्त जैसेहोवै तैसे सोअर्जुन भीतभीतहुआ अर्थात् अत्यंतभयकरिकैयुक्तहुआ पूर्व श्रीकृष्ण भगवान्कूंनमस्कारकरिकै पुनःभीप्रणामकरिकै अर्थात् अत्यंतनम्रहोइकै पुनःभी यहवक्ष्यमाणवचन कहताभया इति ॥ ईहां किसीटीकाविषे (एवाह) इसवच नविषे (एव अह) याप्रकारकापदच्छेदकरिकै अह इसपदकूं प्रसिद्धिकावाचक अव्ययपदमान्याहै ॥ काहेतैं आह इसप्रकारकापदच्छेदकरिकै आह इसपदकूं जोवचनरूपक्रियाकावाचकमानिये ॥ तौं पुनः अर्जुनउवाचयहवक्ष्यमाणवचन पुनरुक्तहोवैंगा ॥ यातैं (प्रणम्यअर्जुनउवाच) याप्रकारतैंही पदोंकासंबं

धकरणा (प्रणम्यआह) याप्रकारतैंपदोंकासंबंधकरणानहीं इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ अबएकादशश्लोकोंकरिकैअर्जुन श्रीभगवान्‌केप्रति सोवचनकहेहै ॥

(मू०श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ स्थानेहृषीकेशतवप्रकीर्त्याजगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यतेच ॥ रक्षांसिभीतानिदिशोद्रवंतिसर्वेनमस्यंतिच सिद्धसंघाः ॥ ३६ ॥ स्थाने । हृषीकेश । तव । प्रकीर्त्या । जगत् । प्रहृष्यति । अनुरज्यते । च । रक्षांसि । भीतानि । दिशः । द्रवंति । सर्वे । नमस्यन्ति । च । सिद्धसंघाः ॥ ३६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेहृषीकेश तुमारी प्रकीर्तिकरिकै यहसर्वजगत् हर्षकूंप्राप्तहोवैहै तथा अनुरागकूंप्राप्तहोवैहै तथाराक्षस भयकूंप्राप्तहुए सर्वदिशावोंविषे भागेजावैहै तथा सर्व सिद्धोंकेसमूह नमस्कारकरेहैं यहसर्व वार्ता युक्तहींहै ॥ ३६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेहृषीकेश अर्थात् हेसर्वइंद्रियोंकेप्रवर्त्तक जिसकारणतैं तूंपरमेश्वर अत्यंतअद्भुतप्रभाववालाहैं तथाभक्तवत्सलहैं ॥ तिसकारणतैं तुमारीप्रकीर्तिकरिकै अर्थात् तुमारीनिरतिशयउत्कृष्टताकेकीर्त्तनकरिकै तथाश्रवणकरिकै केवल मैंअर्जुनही अत्यंतहर्षकूंनहींप्राप्तहोता ॥ किंतु राक्षसोंकाविरोधी जितनाकी चेतनमात्ररूपजगत्‌है ॥ सोसर्वजगत्‌भी तिसआपकीप्रकीर्त्तिकरिकै महान्‌हर्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ताभी युक्तहींहैं ॥ तथा तिसतुमारीप्रकीर्त्तिकरिकै यहसर्वजगत् तैंपरमेश्वरविषयक अनुरागकूं जोप्राप्तहोवैहै ॥ सोभी युक्तहींहै ॥ तथा तिसतुमारीप्रकीर्त्तिकरिकै सर्वराक्षस भयकूंप्राप्तहुए जो सर्वदिशावोंविषे भागेभागेजावैहैं ॥ सोभी युक्तहींहै ॥ तथा सर्व कपिलादिक सिद्धोंकेसमूह तैंपरमेश्वरकेतांई जोश्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरेहैं ॥ सोभी युक्तहीं है इति ॥ और किसी टीकाविषेतौं (स्थानेहृषीकेश) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ हेहृषीकेश (कालोस्मिलोकक्षयकृत्प्रवृद्धोलोकान्समाहर्तुमिहप्रवृत्तः) अर्थयह ॥ भूमिविषेभाररूपजेदुष्टजनहैं तिनसर्वदुष्टलोकोंकेसंहारकरणेवासतै मैंकालरूपपरमेश्वर प्रवृत्तहुआहूं ॥ यहवचन आपनैं पूर्वकथनकऱ्याथा ॥ तिस आपके प्रकृष्टवचनरूपप्रकीर्तिकूंश्रवणकरिकै यहसाधुलोकरूपजगत् जो परमसंतोषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ सोभी युक्तहींहै ॥ अर्थात् साधुलोकोंकेरक्षणकरणेवासतै परमेश्वरनैं सर्वदुष्टजनोंकेसंहारकियाहुए तिनसाधुलोकोंकूं परमसंतोषकीप्राप्तिहोणी युक्तहींहै तथा तैंपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकूंश्रवणकरिकै तेसाधुलोक तैंभक्तवत्सल तथासर्वभूतोंकेसुहृदरूप परमात्मादेवविषे जो अनुरागकूंकरेहैं ॥ सोभीयुक्तहींहै ॥ अर्थात् सर्वलोकोंकेउपद्रवकूंनिवृत्तकरणेवासतैउद्यमवाले तथापरमकृपालुरूप ऐसेतैंपरमेश्वरविषे तिनसाधुलोकोंका अनुरागहोणा युक्तहींहै ॥तथा तैंपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकेश्रवणकरिकै सर्वराक्षस भयकूंप्राप्तहुए जो पूर्वादिकदिशावोंकेकोणोंविषे भागेभागेजावैहैं ॥ साभीयुक्तहींहै॥तथा तैंपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकेश्रवणकरिकै सर्वलोकोंकेसुखकीइच्छाकरणेहारे सर्वसिद्धोंकेसमूह तैंपरमेश्वरकेतांई जोनमस्कारकरेहैं

सोभी युक्तहींहैं ॥ ईहां सिद्ध यहशब्द देवजातिमात्रकाउपलक्षणहै ॥ अर्थात् देव ऋषि सिद्ध गंधर्व चारण इत्यादिकसर्वदेवत्वजातिवालेपुरुष हेस्वामिन् जोतुमनैं दुष्टजनोंकेसंहारकरणेकीप्रतिज्ञाकरीहै साप्रतिज्ञा अवश्यकरिकै पूर्णकरणी याप्रकारकीप्रार्थनापूर्वक तैंपरमेश्वरकेतांई जोप्रमाणकरेहैं ॥ सोभी युक्तहींहै इति ॥ तहां (स्थानेहृषीकेश) यहश्लोक रक्षोघ्ननामामंत्ररूपकरिकै मंत्रशास्त्रविषेप्रसिद्धहै ॥ जिसमंत्रकेअनुष्ठानकरिकै दुष्टराक्षसोंकाहननहोवै तामंत्रकानाम रक्षोघ्नमंत्रहै इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे अर्जुननैं श्रीभगवान्‌विषे सर्वलोकोंके हर्षकीविषयता तथाअनुरागकीविषयता तथानमस्कार्यता कथनकरी ॥ अब तिसीअर्थकीसिद्धिकरणेविषे अर्जुन हेतुकहेहै ॥

(मू० श्लो०) कस्माच्चतेननमेरन्महात्मन्गरीयसेब्रह्मणोप्यादिकर्त्रे ॥ अनंतदेवेशजगन्निवासत्वमक्षरंसदसत्तत्परंयत् ॥ ३७ ॥
कस्मात् । च । ते । न । नमेरन् । महात्मन् । गरीयसे । ब्रह्मणः । अपि । आदिकर्त्रे । अनंत । देवेश । जगन्निवास । त्वम् । अक्षरं । सत् । असत् । तत्परं । यत् ॥ ३७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहात्मन् हेअनंत हेदेवेश हेजगन्निवास ब्रह्माके भी गुरुरूप तथाजनकरूप ऐसेआपकेतांई तेसर्वदेवता किसंवासतैं नहीं नमस्कारकरैंगे किंतुकरैंगेहीं हेभगवन् तूं हीं सत्‌रूपहैं तथाअसत्‌रूपहैं तथातिनदोनोंतैंपरे जो अक्षरब्रह्महै सोभीतूंहैं ॥ ३७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहात्मन् अर्थात् हेपरमउदारचित्तवाला ॥ तथा हेअनंत अर्थात् हेदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित ॥ तथा हे देवेश अर्थात् हेहिरण्यगर्भादिकसर्वदेवतावोंकेनियंता ॥ तथा हेजगन्निवास अर्थात् हेसर्वजगत्‌काआश्रयरूप ॥ तुमारेतांई तेसर्वसिद्धोंकेसमूह तथासर्वदेवता किसवासतै नहींनमस्कारकरैंगे ॥ किंतुआपकेतांई तिनसर्वोंकानमस्कारकरणा उचितहींहै ॥ कैसेहोआप ॥ सर्वजगत्‌कागुरुरूपजोब्रह्माहै तिसब्रह्माकेभी अत्यंतगुरुरूपहो ॥ तथा इससर्वजगत्‌काजनकजोब्रह्माहै तिसब्रह्माकेभी जनकहो ॥ ऐसेआपकेतांई तिनसर्वसिद्धादिकोंकानमस्कार उचितहींहै ॥ ईहां (कस्माच्च) इसवचनकेअंतविषेस्थितजोचकारहै ॥ ताचकारकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ ब्रह्मादिकदेवतावोंकाभी नियंतापणा तथाउपदेष्टापणा इत्यादिकहेतुवोंविषे एकएकभीहेतु आपपरमेश्वरविषे तिनसर्वसिद्धोंकीनमस्कार्यताका प्रयोजकहै ॥ जबी एकएकभीहेतु आपविषे तानमस्कार्यताका प्रयोजकहुआ ॥ तबी महात्मापणा तथाअनंतपणा तथाजगन्निवासपणा इत्यादिकअनेकशुभगुणोंकरिकैयुक्तहुआ सोहेतु आपविषे तानमस्कार्यताकाप्रयोजकहै याकेविषेक्याआश्चर्यहै इति ॥ पुनःकैसेहोआप सत्‌रूपहो तथाअसत्‌रूपहो ॥ तहां अस्ति इसप्रकारकीविधिमुखप्रतीतिकरिकै जोवस्तु प्रतीतहोवैहै तावस्तुकानाम सत्‌है ॥ और नास्तिइसप्रकारकीनिषेधमुखप्रतीतिकरिकै

जोवस्तु प्रतीतहोवैहै तावस्तुकानाम असत्है ॥ अथवा व्यक्तकानाम सत्है ॥ और अव्यक्तकानाम असत्है ॥ सोसत्असत्रूपभी आपहींहो ॥ तथा तिससत्असत्तैंभीसूक्ष्म जोसर्वकामूलकारणरूप अक्षरब्रह्महै सोअक्षरब्रह्मभी आपहींहो ॥ तैंपरमेश्वरतैंभिन्न कोईभीवस्तुनहींहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (सर्वंह्येतद्ब्रह्म) ॥ अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहींहै इति ॥ हेभगवन् इसपूर्वउक्तसर्वहेतुवोंकरिकै तेसिद्धादिकसर्वलोक तैंपरमेश्वरकेताईं नमस्कारकरेहैं तथाअत्यंतहर्षकूं तथा अनुरागकूं करेहै इसविषे कोई आश्चर्यनहींहैं इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ अब अत्यंतभक्तिकेवेगतैं सोअर्जुन पुनःभी श्रीकृष्णभगवान्कीस्तुतिकरेहै ॥

(मू० श्लो०) त्वमादिदेवःपुरुषःपुराणस्त्वमस्यविश्वस्यपरंनिधानम् ॥ वेत्तासिवेद्यंचपरंचधामत्वयाततंविश्वमनंतरूप ॥ ३८ ॥

त्वम् । आदिदेवः । पुरुषः । पुराणः । त्वम् । अस्य । विश्वस्य । परम् । निधानम् । वेत्ता । असि । वेद्यम् । च । परम् । च । धाम । त्वया । ततम् । विश्वम् । अनंतरूप ॥ ३८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअनंतरूप तूं परमेश्वरहीं आदिदेवहैं तथापुरुषहैं तथापुराणहैं तथातूंहीं इस विश्वका परम निधानहैं तथासर्वके जानणेहारा हैं तथा सर्वदृश्यरूपहैं तथा परम धामरूपहैं तथा तुमनैंहीं यहसर्वविश्व व्याप्तकऱ्याहै ॥ ३८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअनंतरूप अर्थात् हेदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितस्वरूप ॥ इससर्वजगत्केउत्पत्तिकाहेतुहोणेतैं तुमहीं आदिदेवहो ॥ तथा सर्वत्र अस्तिभातिप्रियरूपकरिकैपूर्णहोणेतैं तुमहीं पुरुषहो ॥ अथवा सर्वशरीररूपपुरियोंविषे शयनकर्त्ताहोणेतैं तुमहीं पुरुषहो ॥ तथा तुमहीं पुराणहो ॥ अर्थात् अनादिहो ॥ अथवा इसशरीरकेनाशहुएभी आप नाशहोतेनहीं यातैं पुराणहो ॥ तथा तुमहीं इससर्वविश्वका परमनिदानहो ॥ अर्थात् इससर्वविश्वकेलयका स्थानरूपहो ॥ ईहां (आदिदेवःपरंनिधानम्) इनदोनोंपदोंकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे सर्वजगत्के उत्पत्तिकाहेतुपणा तथालयकास्थानपणा कथनकऱ्या ॥ ताकरिकैं परमेश्वरविषे सर्वजगत्का उपादानकारणपणा कथनकऱ्या ॥ काहेतैं जिसतैं कार्य उत्पन्नहोवैहै तथा जिसविषे कार्य लयहोवैहैं ॥ सो उपादानकारणहींहोवैहै ॥ जैसे घटरूपकार्य मृत्तिकातैंहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ तथामृत्तिकाविषेहीं लयहोवैहै ॥ यातैं सामृत्तिका ताघटका उपादानकारणहींहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं परमेश्वरविषे सर्वजगत्काउपादानकारणपणाकहिकै अब सर्वज्ञतारूपहेतुकरिकै सांख्यशास्त्रकल्पितजडप्रधानरूपकारणकीव्यावृत्तिकरताहुआ अर्जुन तिसपरमेश्वरविषे जगत्का निमित्तकारणपणाभी कथनकरेहै (वेत्तासिइति) हेभगवन् सर्वज्ञहोणेतैं आपहीं इससर्वजगत्केजानणेहारेहो ॥ अर्थात् आपहींइससर्वजगत्का कर्त्तारूपनिमित्तकारणहो ॥ तहां इससर्वजगत्कूं जो परमेश्वरतैं भिन्नअंगीकारकरिये तौ द्वैतभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ ताद्वैतभावकीनिवृत्तिकरणेवासतै अर्जुन कहेहै (वेद्यमिति)

हेभगवन् जितनाकीयहदृश्यप्रपंचहै सोभीतूंहींहैं ॥ अर्थात् ज्ञानस्वरूप तैंपरमेश्वरविषे इसजडरूपदृश्यप्रपंचका कोईभीवास्तवसंबंधहैनहीं ॥ यातैं यहसर्वदृश्यप्रपंच तैंपरमेश्वरविषे कल्पितहींहै ॥ और कल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंपृथक्होवैनहीं ॥ जैसे कल्पितसर्पादिक रज्जुरूपअधिष्ठानतैं पृथक्होवैनहीं ॥ यातैं द्वैतभावकीप्राप्ति होवैनहीं इति ॥ इसीकारणतैंहीं आप परमधामहो ॥ अर्थात् सत्‌चित्‌आनंदघन तथाकार्यसहितअविद्यातैंरहित जोव्यापकविष्णुका परमपदहै सोपरमपदभी आपहींहो ॥ हेभगवन् स्वतःसत्तास्फूर्तितैंरहितजोयहसर्वविश्वहै ॥ सोयहसर्वविश्व स्थितिकालविषे मायिकसंबंधकरिकै तैंसत्तास्फुरणरूपकारणनैंहीं व्याप्तकऱ्याहै ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठाननैं आपणेइदमूरूपकरिकै कल्पितसर्वदंडादिक व्याप्तकऱ्येहैं ॥ तैसे तैंपरमेश्वरनैंहीं आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै यहसर्वजगत्‌व्याप्त कऱ्याहै इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन श्रीभगवान्‌की सर्वदेवतारूपकरिकै स्तुतिकरेहै ॥

(मू० श्लो०)वायुर्यमोग्निर्वरुणःशशांकःप्रजापतिस्त्वंप्रपितामहश्च ॥ नमोनमस्तेस्तुसहस्रकृत्वःपुनश्चभूयोपिनमोनमस्ते ॥ ३९ ॥
वायुः । यमः । अग्निः । वरुणः । शशांकः । प्रजापतिः । त्वं । प्रपितामहः । च । नमः । नमः । ते । अस्तु । सहस्रकृत्वः । पुनः । च । भूयः । अपि । नमः । नमः । ते ॥ ३९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् वायु यम अग्नि वरुण चंद्रमा प्रजापाति तथा प्रपितामह इत्यादिकसर्वदेवतारूप तूंपरमेश्वरहींहै यातैं तैंपरमेश्वरकेताई हमारा अनेकसहस्रवार नमस्कार नमस्कार होवउ तथा तुमारेताई पुनः भी वारंवार नमस्कार नमस्कार होवउ ॥ ३९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् तूंपरमेश्वरहीं वायुरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं यमरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं अग्निरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं वरुणरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं चंद्रमारूपहैं ॥ ईहां (शशांकः) यहशब्द सूर्यादिकदेवतावोंकाभी उपलक्षकहै ॥ अर्थात् तूंपरमेश्वरहीं सूर्यादिकसर्वदेवतारूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं प्रजापतिरूपहैं ॥ ईहां (प्रजापतिः) इसशब्दकरिकै विराट्‌काग्रहणकरणा अथवा हिरण्यगर्भकाग्रहणकरणा अथवा दक्षादिकोंकाग्रहणकरणा ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं प्रपितामहरूपहैं ॥ अर्थात् तिसहिरण्यगर्भकाभी पितारूपजोकारणब्रह्महै सोभीतूंपरमेश्वरहींहैं ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं सर्वदेवतारूपहोणेतैं तूंपरमेश्वर सर्वप्राणीयोंकरिकै नमस्कारकरणेयोग्यहै ॥ तिसकारणतैं मैंअत्यंतअनाथअर्जुनकाभी तुमारेताई अनेकसहस्रवार नमस्कारहोवउ नमस्कारहोवउ ॥ तथा पुनःभी आपकेताई वारंवार नमस्कारहोवउ नमस्कारहोवउ ॥ ईहां पुनःपुनः नमस्कारोंकीआवृत्तिकरिकै अर्जुननैं भक्तिश्रद्धापूर्वक भगवत्‌केनमस्कारोंविषे अलंबुद्धिकाअभाव सूचनकऱ्या ॥ अर्थात् तैंपरमेश्वरकेताई श्रद्धाभक्तिपूर्वक पुनःपुनःनमस्कारोंकेकरणेतैं मैंअर्जुनकीतृप्तिहोतीनहीं इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो) नमःपुरस्तादथपृष्ठतस्तेनमोस्तुतेसर्वतएवसर्व ॥ अनंतवीर्यामितविक्रमस्त्वंसर्वंसमाप्नोषिततोसिसर्वः ॥४०॥ नमः । पुरस्तात् । अथ । पृष्ठतः । ते । नमः । अस्तु । ते । सर्वतः । एव । सर्व । अनंतवीर्यामिताविक्रमः । त्वं । सर्वम् । समाप्नोषि । ततः । असि । सर्वः ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः) ॥ हेसर्व तुमारेतांई अग्रभागविषे हमारा नमस्कार होवउ तथा पृष्ठविषेभी नमस्कार होवउ तथा तुमारेतांई सर्वदिशावोंविषेहीं नमस्कारहोवउ तूंपरमेश्वर अनंतवीर्यअमितविक्रमवालाहैं तथातूं इससर्वजगत्कूं व्याप्तकरेहैं तिसंकारणतैं तूंपरमेश्वर सर्व कह्याजावैहैं ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेसर्व अर्थात् हेसर्वात्मारूपभगवन् मैं अर्जुनका तैंपरमेश्वरकेतांई अग्रभागविषेभी नमस्कारहोवौ ॥ तथा मैंअर्जुनका तैंपरमेश्वरकेतांई पृष्ठभागविषेभीनमस्कारहोवौ ॥ तथा मैंअर्जुनका तैंपरमेश्वरकेतांई सर्वदिशावोंविषे नमस्कारहोवौ ॥ ईहां यद्यपि सर्वात्मारूपव्यापकपरमेश्वरके अग्रभागपृष्ठभागादिक संभवतेनहीं ॥ परिच्छिन्नपदार्थकेहीं तेअग्रभागादिकहोवेहैं ॥ तथापि अर्जुननैं तिससर्वात्मारूप परमेश्वरके तेअग्रभागादिककल्पनाकरिकै कथन करेहैं ॥ वास्तवतैं तासर्वात्मारूपपरमेश्वरके तेअग्रभागादिकहैंनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (पुरस्तात्) इसपदका कर्मोंकेआदिविषे यहअर्थ कन्याहै ॥ और (पृष्ठतः) इसपदका तिनकर्मोंकीसमाप्तिविषे यहअर्थकन्याहै ॥ और (सर्वतः) इसपदका तिनकर्मोंकेमध्यविषे यहअर्थकन्याहै ॥ अर्थात् कर्मोंकेआदिविषेभीतैं परमेश्वरके तांई हमारानमस्कारहोवौ ॥ तथा तिनकर्मोंकीसमाप्तिविषेभी तैंपरमेश्वरकेतांई हमारा नमस्कारहोवौ ॥ तथा तिनकर्मोंके मध्यविषेभी तैंपरमेश्वरकेतांई हमारा नमस्कारहोवौ ॥ इसव्याख्यानविषे तिस सर्वात्मारूपपरमेश्वरके अग्रभागादिक कल्पनाकन्येजावैनहीं इति ॥ हेभगवन् आपकैसेहो ॥ अनंतवीर्यअमितविक्रमहो ॥ तहां अनंतहै वीर्यजिसका तथाअमितहैविक्रमजिसका ताकानाम अनंतवीर्यअमितविक्रमहै ॥ तहांशरीरकेबलका नाम वीर्यहै ॥ और शिक्षाशस्त्रोंके प्रयोगकीजाकुशलताहै ताकानाम विक्रमहै ॥ तहांएकवीर्यकरिकैहींअधिकता तथाएकविक्रमकरिकैहींअधिकता तौं भी दुर्योधनादिकोंविषे तथाअन्यराजावोंविषेभी विद्यमानहै ॥ परंतु अनंतवीर्यकरिकैअधिकता तथा अमितविक्रमकरिकैअधिकता आपपरमेश्वरतैंविना दूसरेकिसीविषेहैनहीं ॥ किंतु एकआपविषेहींहै ॥ अथवा (अनंतवीर्य अमितविक्रमः) यहदोपदजानणे तहां अनंतवीर्य यहपदतौं हेअनंतवीर्य याप्रकारतैं श्रीभगवान्का संबोधनहै इति ॥ तहां अर्जुननैं श्रीभगवान्का (हेसर्व) यहसंबोधन कथनकन्याथा ॥ तासर्वशब्दकेअर्थकूं अब अर्जुन कथनकरेहै (सर्वंसमाप्नोषिततोसिसर्वः इति) हेभगवन् जिसकारणतैं तूंपरमेश्वर इससर्वजगत्कूं आपणे सत्ता स्फुरणरूपकरिकै व्याप्तकरि रह्याहैं ॥ तिसकारणतैं तूंपरमेश्वर सर्व इसनामकरिकै

कह्याजावेहैं ॥ अर्थात् तैंपरमेश्वरतैंअतिरिक्त कोईभीवस्तुनहींहैं इति ॥४०॥ ❀ ॥ हेभगवन् जिस कारणतै मैंअर्जुन तैंपरमेश्वरकेमाहात्म्यकेअज्ञानतैं तुमारे अनेकअपराधोंकूं करताभयाहूं तिसकारणतैं परमकृपालुरूप तैंपरमेश्वरकूं दंडवत्प्रणामकरिकै मैंअर्जुन तिनआपणेअपराधोंकीक्षमा करताहूं ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुन दोश्लोकोंकरिकै कहेहै ॥

(मू० श्लो०) सखेतिमत्वाप्रसभंयदुक्तंहेकृष्णहेयादवहेसखेति ॥ अजानतामहिमानंतवेदंमयाप्रमादात्प्रणयेनवापि ॥ ४१ ॥

सखा । इति । मत्वा । प्रसभं । यत् । उक्तं । हेकृष्ण । हेयादव । हेसखा । इति । अजानता । महिमानं । तव । इदं । मया । प्रमादात् । प्रणयेन । वा । अपि ॥ ४१ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेभगवन् तुमारे इसविश्वरूपकूं तथाऐश्वर्यरूपकूं नजानणेहारे मैंअर्जुननैं यहकृष्णहमारासखाहै इसप्रकार मानिकै चित्तकेविक्षेपतैं अथवा स्नेहकरिकै भी जे हेकृष्ण हेयादव हेसखा इसप्रकारके अभिभवपूर्वकवचन कहेहैं तेसर्व आप क्षमाकरौ ॥ ४१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् यहकृष्णभगवान् हमारा सखाहै अर्थात् समानवयवालाहै अथवा हमारेमामेकापुत्रहै ॥ इस प्रकारका तुमारेकूं मानिकै हमनैं आपणेचित्तकेविक्षेपरूपप्रमादतैं अथवा स्नेहकरिकै आपकेप्रति जेप्रसभवचनकथनकऱ्येहैं ॥ अर्थात् आपणी उत्कृष्टताकाख्यापनरूपअभिभवकरिकै जेअनुचित वचन कथनकऱ्येहैं ॥ तेसर्वहमारे अपराध आप क्षमाकरौ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन ऐसेअनुचितवचन तुमनैं किसहेतुतैं कथनकरेहैं ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहुए ॥ अर्जुन तिनअनुचितवचनोंकेकहणेविषे हेतुकूं कथनकरेहै ॥ (अजानतामहिमानंतवेदमिति) हेभगवन् जिसकारणतैं तुमारे इसविश्वरूपकूं तथातुमारेऐश्वर्यरूपमहिमाकूं मैं अर्जुन पूर्व जानतानहींथा ॥ इसकारणतैं मैंअर्जुन आपकेप्रति तेअनुचितवचन कहताभयाहूं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन तुमनैं हमारेकूं ऐसेकौंनअनुचितवचनकहेहैं ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुन तिनअनुचितवचनोंकास्वरूप कथनकरेहै (हेकृष्णहेयादवहेसखाइति) हेभगवन् सर्वजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणेहारे तथाब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंकेभीगुरुरूप ऐसेआपपरमेश्वरकूं मैं अर्जुन हेकृष्ण हेयादव हेसखा इसप्रकारकेसंबोधनोंकरिकै बुलावताभयाहूं इति ॥ तहां किसी मूलपुस्तकविषे (महिमानंतवेमं) याप्रकारकाभीपाठहोवैहै ॥ इसप्रकारकेपाठविषेतौ (महिमानम् इमम्) इनदोनोंपदोंका सामानाधिकरण्यहीं जानणा ॥ अर्थात् तुमारे इसविश्वरूपमहिमाकूं मैं अर्जुन पूर्वजानतानहींथा इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) यच्चावहासार्थमसत्कृतोसिविहारशय्यासनभोजनेषु ॥ एकोथवाप्यच्युततत्समक्षंतत्क्षामयेत्वामहमप्रमेयम् ॥ ४२ ॥

यत् । च । अवहासार्थम् । असत्कृतः । असि । विहारशय्यासनभोजनेषु । एकः । अथवा । अपि । अच्युत । तत्समक्षं । तत् । क्षामये । त्वाम् । अहम् । अप्रमेयम् ॥ ४२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअच्युत तथा परिहासकेवासतै विहारशय्याआसनभोजनविषे एकलास्थितहुआ अथवा कदाचित् तिनसखावोंकेसन्मुखस्थितहुआ तूं परमेश्वर मैंअर्जुननैं जो पराभवकऱ्या है सोसर्वअपराध मैंअर्जुन तैं अप्रमेयकेप्रति क्षमाकरावताहूं ॥ ४२ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअच्युत अर्थात् हेसर्वदानिर्विकार ॥ क्रीडारूपजोविहारहै तिसविहारविषे ॥ तथा वस्त्रतूलिकादिकोंकरिकैरचीहुईजा शयनकरणेकास्थानरूप शय्याहै तिसशय्याविषें ॥ तथा सिंहासनादिरूप जोआसनहै ताआसनविषे ॥ तथा सजातीयबहुतपुरुषोंकीपंक्तिविषे अन्नकाभक्षणरूपजोभोजनहै ताभोजनविषे ॥ सर्वसखावोंकूंछोडिकैएकलेस्थितहुएआपका अथवा परिहासकरतेहुए तिनसखावोंकेसमीपस्थितहुए आपका मैंअर्जुननैं उपहासकेवासतै जोपराभवकऱ्याहै ॥ तेअनुचितवचनरूप सर्वअपराध अथवा असत्करणरूप सर्वअपराध मैंअर्जुन तुमारेतैं क्षमाकरावताहूं ॥ कैसेहोआप अप्रमेयहो ॥ अर्थात् अचिंत्यप्रभाववालेहो ॥ तात्पर्ययह ॥ अचिंत्यप्रभाववाला तथा सर्वविकारोंतैं रहित तथापरमकृपालुरूप ऐसेआपपरमेश्वरनैं तुमारेप्रभावकूंनजानणेहारेमैंअर्जुनके तेसर्वअपराध क्षमाकरणे इति ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति सापूर्वउक्त अचिंत्यप्रभावता स्पष्टकरिकैवर्णनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) पितासिलोकस्यचराचरस्यत्वमस्यपूज्यश्चगुरुर्गरीयान् ॥ नत्वत्समोस्त्यभ्यधिकःकुतोन्योलोकत्रयेप्यप्रतिमप्रभाव ॥ ४३ ॥ पिता । असि । लोकस्य । चराचरस्य । त्वम् । अस्य । पूज्यः । च । गुरुः । गरीयान् । न । त्वत्समः । अस्ति । अभ्यधिकः । कुतः । अन्यः । लोकत्रये । अपि । अप्रतिमप्रभाव ॥ ४३ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेउपमातैंरहितप्रभाववाला इस चराचररूप सर्वलोकका तूं पितारूपहैं तथा पूज्यहैं तथागुरुरूपहैं तथा गुरुतरहै तीनलोकविषे तुमारेसमान भी कोईअन्य नहीं हैं तौ तुमारेतैं अधिक कहांतैंहोवै ॥ ४३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् इसस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्मात्रका तूं पिताहै अर्थात् जनकहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (यतोवाइमानिभूतानिजायंते ॥ अर्थयह ॥ जिसपरमात्मादेवतैं यहसर्वभूतप्राणी उत्पन्नहोवैहैं ॥ इत्यादिकश्रुतियां तैंपरमेश्वरकूं सर्वजगत्काजनककहेहैं ॥ तथा सर्वकाईश्वरहोणेतैं आपही पूज्यहो ॥ तथा आपहीं सर्वशास्त्रकेउपदेशकरणेहारे गुरुरूपहो ॥ इसी कारणतैंहीं सर्वप्रकारकरिकै आप गुरुतरहो ॥ अर्थात् सर्वतैंउत्कृष्टहो ॥ इसीकारणतैंही हेभगवन् तीनलोकोंविषे तैंपरमेश्वरकेसमानभी

दूसराकोईहैनहीं॥तौं तिनतीनलोकोंविषे तैंपरमेश्वरतैं अधिक दूसरा कोईकहांतैंहोवैंगा ॥ किंतु कोईभीअधिकनहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥तैंपरमेश्वरकेसमान दूसराकोईहै नहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् तैंपरमेश्वरकेसमान दूसराकोई अंगीकारकरिये ॥ तौं सोदूसराभी ईश्वरहींसिद्धहोवैंगा ॥ तहां एकईश्वरतौं इसजगत्केउत्पन्नकरणे कीइच्छाकरैंगा ॥ और दूसराईश्वर तिसीकालविषे इसजगत्केसंहारकरणेकीइच्छाकरैंगा ॥ यातैं कोईभीव्यवहार सिद्धनहींहोवेंगा ॥ किंतु सर्वव्यवहारोंकालो पहोवैंगा ॥ यातैं तैंपरमेश्वरकेसमान दूसराकोईहैनही ॥ जबी तीनलोकोंविषे तैंपरमेश्वरकेसमानभीकोईनहीभया ॥ तबी तुमारेतैंअधिक कौंनहोवैंगा ॥ किंतु सर्वप्रकारकरिकै तुमारेतैंअधिक कोईहैंनहा ॥ तहांश्रुति ॥ (नत्वत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते) ॥ अर्थयह ॥ तिसपरमेश्वरकेसमानभी कोईदेखणेविषेआवतानही ॥ तथा तिसपरमेश्वरतैं अधिकभी कोईदेखणेविषे आवतानहीं इति ॥ तहां तैंपरमेश्वरकेसमानपुरुषकाही असंभवहै इसपूर्वउक्तअर्थविषे अर्जुन हेतुकहेहै (हेअ प्रतिमप्रभावइति) ईहां सादृश्यकानाम प्रतिमाहै ॥ सासादृश्यरूपप्रतिमानहींहै वियमानजिसकूं ताकानाम अप्रतिमहै ॥ ऐसाअप्रतिमहैप्रभावक्या सामर्थ्य जिसका ताकानाम अप्रतिमप्रभावहै इति ॥ ४३ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं आप ऐसेहो ॥ तिसकारणतैं मैंअर्जुन आपणे अपराधोंकूंक्षमाकरावणेवासतै आपकेआगेदं डवत्प्रणामकरिकै प्रार्थनाकरताहूं ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुनकहेहै ॥

(मू० श्लो०) तस्मात्प्रणम्यप्रणिधायकायंप्रसादयेत्वामहमीशमीडचम् ॥ पितेवपुत्रस्यसखेवसख्युःप्रियःप्रियायार्हसिदेवसोढुम् ॥ ४४ ॥ तस्मात् । प्रणम्य । प्रणिधाय । कायं । प्रसादये । त्वाम् । अहम् । ईशम् । ईडचम् । पिता । इव । पुत्रस्य । सखा । इव । सख्युः । प्रियः । प्रियायाः । अर्हसि । देव । सोढुम् ॥ ४४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् तिसकारणतैं तैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकरिकै तथाआपणेदेहकूं भूमिविषेदंडकीन्यांई धारणकरिकै मैंअर्जुन सर्वोंकरिकैस्तुतिकरणेयोग्य तैं ईश्वरकूं प्रसंन्नहोवो ऐसीप्रार्थनाकरूंहूं इसकारणतैं हेदेव पुत्रकेअपराधकूं पिताकी न्यांई तथासखाकेअपराधकूं सखाकी न्यांई तथाप्रियाकेअपराधकूं पतिकिन्यांई हमारेअपराधकूं आप क्षमाकरणेकूं योग्यहो ॥ ४४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं तूंपरमेश्वर इससर्वलोकका पितारूपहैं ॥ तथा सर्वकागुरुरूपहैं ॥ तिसकारणतैं मैंअर्जुन तैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकरिकै तथा आपणीकायाकूं अत्यंतनीचैधारणकरिकै अर्थात् दंडकीन्यांई भूमिविषेपतनहोइकै तैंपरमेश्वरकेप्रसन्नताकीप्रार्थना करताहूं ॥ अर्थात् मैंअपराधीअर्जुन तिन आपणेअपराधोंकीक्षमाकरावणेवासतैं मैंअर्जुनऊपरि आप प्रसन्नहोवौ याप्रकारकीप्रार्थना आपकेआगेकरताहूं ॥ कैसेहोआप ईशहो ॥ अर्थात् इससर्वजगत्के

नियंताहो ॥ पुनःकैसेहोआप ईड्यहो ॥ अर्थात् ब्रह्मादिकदेवतावोंकरिकैभी स्तुतिकरणेयोग्यहो ॥ इसकारणतैं हेदेव अर्थात् हेस्वप्रकाशरूप ॥ जैसे पुत्रके अपराधकूं पिता क्षमाकरेहै ॥ तथा जैसे सखाकेअपराधकूं सखा क्षमाकरेहै ॥ तथा जैसे पतिव्रताप्रियाकेअपराधकूं पति क्षमाकरेहै ॥ तैसे मैंअर्जुनकेअपराध कूंभी आपपरमेश्वर क्षमाकरणेकूंयोग्यहो ॥ जिसकारणतैं मैंअर्जुन केवल तुमारेहींशरणहूं ॥ अन्यकिसीकेशरणहूंनहीं ॥ तिसकारणतैं आप हमारेअपराधकूं क्षमाकरणेयोग्यहो इति ॥ ईहां (प्रियायार्हसि) इसवचनविषे वत् इसशब्दकालोप तथा विसर्गोंकेलोपहुएभीसंधि यहदोनों छांदसहैं इति ॥ ४४ ॥ ❁ ॥ इसप्रकार अर्जुन श्रीभगवान्‌केप्रति आपणेअपराधकेक्षमाकीप्रार्थनाकरिकै पुनः श्रीभगवान्‌केप्रति तिसविश्वरूपकेउपसंहारपूर्वक पूर्वलेरूपकेदर्शनकीप्रार्थना दोश्लोकोंकरिकै करेहै ॥

(मू० श्लो०) अदृष्टपूर्वंहृषितोस्मिदृष्ट्वाभयेनचप्रव्यथितंमनोमे ॥ तदेवमेदर्शयदेवरूपंप्रसीददेवेशजगन्निवास ॥ ४५ ॥ अदृष्टपूर्वम् । हृषितः । अस्मि । दृष्ट्वा । भयेन । च । प्रव्यथितम् । मनः । मे । तत् । एव । मे । दर्शय । देव । रूपम् । प्रसीद । देवेश । जगन्निवास ॥ ४५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् पूर्वकबीभीनहींदेख्येहुएइसविश्वरूपकूं देखकै मैंअर्जुन हर्षवान् हूंआहूं तथा भयकरिकै मेरा मन व्याकुलहुआहै यातें मैंअर्जुनकेतांई सोपहला रूप हीं दिखावो हेदेव हेदेवेश हेजगन्निवास मेरेऊपरि प्रसादकूंकरौ ॥ ४५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् मैंअर्जुननैं पूर्व कदाचित्भीनहींदेख्याहुआ ऐसाजो आपकायहविश्वरूपहै ॥ तिसआपकेविश्वरूपकूंदेखिकै मैंअर्जुन हर्षकूंप्राप्तहोताभयाहूं ॥ तथा तिसविकरालरूपकेदर्शनतैं उत्पन्नभयाजोभयहै ॥ तिसभयकरिकै हमारामन व्याकुलहोताभयाहै ॥ यातैं हेभगवन् मैंअर्जुनकेतांई सोप्राणोंतैंभीप्रिय आपणा पूर्वलारूपहीं दिखावौ ॥ हेदेव अर्थात् हेस्वप्रकाशरूप ॥ तथा हेदेवेश अर्थात् हेसर्वदेवतावोंकेनियंता ॥ तथा हेजगन्निवास अर्थात् हेसर्वजगत्काआधाररूप ॥ मैंअर्जुनऊपरि तिसपूर्वलेरूपकादर्शनरूपप्रसादकूंकरौ इति ॥ ४५ ॥ ❁ ॥ अब जिसपूर्वलेरूपकेदर्शनकी अर्जुननैं प्रार्थनाकरीहै ॥ तिसरूपकूं सोअर्जुन विशेषणोंकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) किरीटिनंगदिनंचक्रहस्तमिच्छामित्वांद्रष्टुमहंतथैव ॥ तेनैवरूपेणचतुर्भुजेनसहस्रबाहोभवविश्वमूर्त्ते ॥ ४६ ॥ किरीटिनं । गदिनं । चक्रहस्तम् । इच्छामि । त्वां । द्रष्टुम् । अहं । तथा । एव । तेन । एव । रूपेण । चतुर्भुजेन । सहस्रबाहो । भव । विश्वमूर्ते

॥ ४६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् मैंअर्जुन किरीटवाले तथागदावाले तथाचक्रहैहस्तविषेजिनके ऐसेंतुमारेकूं पूर्वकीन्यांई हीं देखणेकूं इच्छताहूं यातैं हेसहस्रबाहुवाला हेविश्वमूर्त्ति अबीआप तिसपूर्वले चतुर्भुज रूपकरिकै हीं प्रगटहोवो ॥ ४६ ॥ (इतिप०)

॥ टीका ॥ हेभगवन् किरीटकूंधारणकरणेहारे तथागदाकूंधारणकरणेहारे तथाचक्रहैहस्तविषेजिसके ऐसेआपपरमेश्वरकूं मैंअर्जुन इस विश्वरूपतैंपूर्व जैसे देखताभयाहूं ॥ तिसीआपकेसुंदरस्वरूपकूं अबी मैं अर्जुन देखणेकीइच्छाकरताहूं॥ यातैं हेसहस्रबाहो अर्थात् हेअनेकसहस्रभुजावोंवाला॥ तथा हेविश्वमूर्त्ते अर्थात् हेसर्वविश्वरूपमूर्त्तिकूंधारणकरणेहारा श्रीभगवान् ॥ अबीइसकालविषे इसआपकेविश्वरूपकाउपसंहारकरिकै तिसपूर्वलेचतुर्भुजस्वरूपकरिकै प्रगटहोवो ॥ इतनैंकहणे करिकै यह अर्थसूचनकऱ्या ॥ अर्जुननैं सर्वकालविषे श्रीभगवान्का चतुर्भुजादिकस्वरूपहीं देखीताहै इति ॥ ४६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकारतैं अर्जुनकरिकैप्रार्थनाकऱ्याहुआ श्रीभगवान् तिसअर्जुनकूं भयकरिकैपीडितहुआदेखिकै तिसविश्वरूपकाउपसंहारकरिकै उचितवचनोंकरिकै तिसअर्जुनकूं आश्वासनकरताहुआकहेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ मयाप्रसन्नेनतवार्जुनेदंरूपंपरंदर्शितमात्मयोगात् ॥ तेजोमयंविश्वमनंतमाद्यंयन्मेत्वदन्येननदृष्टपूर्वम् ॥ ४७॥ मया । प्रसन्नेन । तव । अर्जुन । इदं । रूपं । परं । दर्शितम् । आत्मयोगात् । तेजोमयं । विश्वम् । अनंतम् । आद्यं । यत् । मे । त्वदन्येन । न । दृष्टपूर्वम् ॥ ४७॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन प्रसन्नतावाले मैंपरमेश्वरनैं आपणेसामर्थ्यतैं तुमारेतांई यहविश्वात्मक श्रेष्ठ रूपं दिखायाहै कैसाहैसोरूप तेजोमयहै तथासर्वविश्वरूपहै तथाअनंतहै तथाअनादिहै जोरूप हमारा तुमारेतैंअन्याकिसीनैंभी नहीं पूर्वदेख्याहै ॥ ४७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तूं इसहमारेविश्वरूपकूंदेखिकै भयकूंमतप्राप्तहोउ ॥ कोई तुमारेकूंभयकीप्राप्तिकरणेवासतै मैनैंयहविश्वरूप दिखायानहीं ॥ किंतु प्रसन्नतावाले मैंपरमेश्वरनैं अर्थात् तैं अर्जुनविषयकअतिशयकृपावाले मैंपरमेश्वरनैं तैंअर्जुनकेतांई यहआपणा विश्वरूपात्मकश्रेष्ठरूप आपणेसामर्थ्यतैं दिखायाहै ॥ सो केवल तुमारेऊपरिकृपादृष्टिकरिकैहीं दिखायाहै ॥ तहां (परम्) इसविशेषणकरिकै ताविश्वरूपविषे कथनकऱ्याजोश्रेष्ठत्वरूपपरत्वहै ॥ तिसीपरत्वकूंहीं अब स्पष्ट करिकैकथनकरेहैं ॥ (तेजोमयमिति) हेअर्जुन कैसाहैसोहमाराविश्वरूप तेजोमयहै ॥ अर्थात् कोटिसूर्यकेप्रकाशसमानहैप्रकाशजिसका ॥ पुनःकैसाहैसोरूप विश्वहै ॥ अर्थात् सर्वविश्वरूपहै ॥ पुनःकैसाहै सोरूप आदिअंततैंरहितहै ॥ ऐसाअपणाविश्वात्मकरूप मैंपरमेश्वरनैं केवल तैंअत्यंतप्रियभक्तअर्जुनकेतांईहीं दिखायाहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहविश्वात्मकरूप मैंपरमेश्वरनैं प्रसन्नहोईकै केवल तैंअर्जुनकेतांईहीं दिखायाहै ॥ यहआपकाकहणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं

धृतराष्ट्रकेगृहविषे भीष्मादिकोंकूंभी यहविश्वरूप आपनै दिखायाथा ॥ तथा बाल्यअवस्थाविषे यशोदामाताकूंभी यहविश्वरूप आपनैं दिखायाथा ॥ तथा अक्रूरकूंभी यहविश्वरूप आपने दिखायाथा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ हेअर्जुन तिनभीष्मादिकोंकूं जोहमनै विश्वरूपदिखायाथा सोइसविश्वरूपका एकअवांतररूपहींथा ॥ यातैं सोरूप सर्वतैंउत्तमनहींथा ॥ औरयहजोविश्वात्मकरूप हमनैं तुमारेकूंदिखायाहै ॥ सोसर्वतैं श्रेष्ठहै ॥ दूसरेकिसीनैभी पूर्व यहरूप देख्यानहीं ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥ (यन्मेइति) हेअर्जुन जोयह हमाराविश्वात्मकरूप तुमारेतैं अन्यकिसीनैभी पूर्वदेख्यानहीं ॥ सोयहविश्वात्मकआपणास्वरूप मैंपरमेश्वरनैं कृपाकरिकै तैं अर्जुनकेतांई अबी दिखायाहै इति ॥ ४७ ॥ ❁ ॥ हेअर्जुन इसविश्वरूपकादर्शनरूप जो अत्यंतदुर्लभ हमाराप्रसादहै॥ तिसहमारे प्रसादकूंप्राप्तहोइकै तूंअर्जुन अब कृतार्थहीं हुआहैं ॥ इसअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् अब ताविश्वरूपकीदुर्लभताकूं कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) नवेदयज्ञाध्ययनैर्नदानैर्नचक्रियाभिर्नतपोभिरुग्रैः ॥ एवंरूपःशक्यअहंनृलोकेद्रष्टुंत्वदन्येनकुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥

न । वेदयज्ञाध्ययनैः । न । दानैः । न । च । क्रियाभिः । न । तपोभिः । उग्रैः । एवं । रूपः । शक्यः । अहं । नृलोके । द्रष्टुं । त्वदन्येन । कुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकुरुवंशविषेअतिशूरवीरअर्जुन इसमनुष्यलोकाविषे इसप्रकारके विश्वरूपवाला मैंभगवान् तुमारेतैंअन्यपुरुषनैं वेदोंकेतथायज्ञोंकेअध्ययनकरिकै देखणेकूं नहीं शक्यहूं तथादानोंकरिकै नहीं देखणेकूं शक्यहूं तथा कर्मोंकरिकैभी नहीं देखणेकूंशक्यहूं तथाउग्र तपोंकरिकै नहीं देखणेकूंशक्यहूं ॥ ४८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंका जो गुरुमुखतैंअक्षरोंकाग्रहणरूप अध्ययनहै ॥ तथा पूर्वमीमांसा कल्पसूत्र इत्यादिकोंकरिकै वेदबोधितकर्मरूपयज्ञोंका जो अर्थविचाररूपअध्ययनहैं ॥ तिनवेदोंकेअध्ययनकरिकै॥ तथायज्ञोंकेअध्ययनकरिकै॥ तथा तुलापुरुषदान कन्यादान गौसुवर्णअन्नदान इत्यादिकदानोंकरिकै ॥ तथा अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्त्तकर्मोंकरिकै ॥ तथा कायइंद्रियोंकेशोषकहोणेतैं करणेविषे अत्यंतकठिन ऐसेजे कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपहैं ऐसेतपोंकरिकै ॥ इसमनुष्यलोकविषे इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर तुमारेतैंअन्यपुरुषोंनै देखणेकूं अशक्यहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैंरहितपुरुष वेदोंकेअध्ययनकरिकै तथावेदप्रतिपादितकर्मोंकेयथार्थज्ञानकरिकै तथादानोंकरिकै तथाउग्रतपोंकरिकै मेरेइसविश्वरूपकूं देखिसकतेनही ॥ ऐसाअत्यंतदुर्लभ यहविश्वरूप हमनैं कृपाकरिकै तुमारेकूंदिखायाहै॥ तिसरूपकेदर्शनतैं अबी तूं कृतार्थहुआहै इति ॥ तहां मूलश्लोकविषे (शक्यः अहम्) इसवचनकेस्थानविषे यद्यपि (शक्योऽहम्) इसप्रकारकावचनही करणेयोग्यथा ॥ तथापि (शक्यअहम्) इसवचनविषेजो शक्य इसपदतैउत्तर

विसर्गोकालोपहै सोछांदसहै ॥ और यद्यपि एकनकारकेपठनतैंहीं अध्ययन दान क्रिया तप इनसर्वोंकानिषेध होइसकेहै ॥ तथापि अध्ययन दान क्रिया तप इनच्यारोंकेसाथि जोभिन्नभिन्न नकारकापठनकन्याहै ॥ सो तिसविश्वरूपकेदर्शनविषे तिनअध्ययनादिकोंकेनिषेधकी दृढतावासतै कथनकन्याहै ॥ और (नचक्रियाभिः) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार ईहांनहींकह्येहुएदूसरेसाधनोंकाभी समुच्चयकरणेवासतेहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैंविना दूसरेकिसीभीसाधनकरिकै यहहमाराविश्वरूप देख्या जातानहीं इति ॥ ४८ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन तुमारेअनुग्रहवासतै मैंपरमेश्वरनैं प्रगटकन्याजोयह आपणा विश्वरूपहै ॥ तिसहमारेविश्वरूपकरिकै जोकदाचित् तुमारेकूं उद्वेगप्राप्तहुएआहै ॥ तौं मैंपरमेश्वर इसआपणेविश्वरूपका अबी उपसंहारकरताहूं ॥ तूं व्यथाकूं मतप्राप्तहोउ ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) मातेव्यथामाचविमूढभावोदृष्ट्वारूपंघोरमीदृङ्ममेदम् ॥ व्यपेतभीःप्रीतमनाःपुनस्त्वंतदेवमेरूपमिदंप्रपश्य ॥ ४९ ॥

मा । ते । व्यथा । मा । च । विमूढभावः । दृष्ट्वा । रूपम् । घोरम् । ईदृक् । मम । इदम् । व्यपेतभीः । प्रीतमनाः । पुनः । त्वम् । तत् । एव । मे । रूपम् । इदम् । प्रपश्य ॥ ४९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके इसप्रकारके इस घोर रूपकूं देखकै तैंअर्जुनकूं व्यथा मतहोवौ तथा विमूढभावभी मतहोवौ किंतु भयतैंरहित प्रसन्नमनहुआ तूं अर्जुन पुनः मैंपरमेश्वरके तिसपूर्वले इस रूपकूं हीं देखै ॥ ४९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अनेकबाहुमुखादिकोंकरिकैयुक्तहोणेतैं अत्यंतभयानक जोयहहमाराविश्वरूपहै ॥ तिसहमारेविश्वरूपकूंदेखिकैस्थितहुआजोतूंअर्जुनहै ॥ तिसतुमारेकूं व्यथा मतप्राप्तहोवौ ॥ अर्थात् भयरूपनिमित्ततैंउत्पन्नभईजा पीडाहै सापीडा मतप्राप्तहोवौ ॥ तथा मेरेइसविश्वरूपकेदर्शनहुएभी जोतुमारेकूं विमूढभाव प्राप्तहुआहै ॥ अर्थात् व्याकुलचित्तपणा तथाअपरितोष प्राप्तभयाहै ॥ सोविमूढभावभी तुमारेकूं मतप्राप्तहोवौ ॥ किंतु भयतैंरहितहोइकै तथाप्रसन्न मनहोइकै तूंअर्जुन पुनःतिसीहमारे चतुर्भुजरूपकूंदेख ॥ अर्थात् इसविश्वरूपतैंपूर्व तूंअर्जुन जिसहमारे चतुर्भुजवासुदेवरूपकूं सर्वदा देखताथा ॥ तिसीहमारेचतुर्भुजरूपकूं तूंअबी भयतैंरहितहोइकै तथासंतोषयुक्तहोइकै देख ॥ ईहां भयतैंरहितपणा तथासंतोष यहदोनों श्रीभगवान्नैं (प्रपश्य) इसवचनविषेस्थित प्र इस शब्दकरिकैकथनकरेहैं इति ॥ ४९ ॥ ❀ ॥ अब संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) संजयउवाच ॥ इत्यर्जुनंवासुदेवस्तथोक्त्वास्वकंरूपंदर्शयामासभूयः ॥ आश्वासयामासचभीतमेनंभूत्वापुनःसौम्य

वपुर्महात्मा ॥ ५० ॥ इति । अर्जुनम् । वासुदेवः । तथा । उक्त्वा । स्वकम् । रूपम् । दर्शयामास । भूयः । आश्वासयामास । च । भीतम् । एनम् । भूत्वा । पुनः । सौम्यवपुः । महात्मा ॥ ५० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र सोकृष्णभगवान् अर्जुनके प्रति इसप्रकारकावचन कहिकै तिसीप्रकारका आपणा चतुर्भुजरूप पुनः दिखावताभया तथा सोपरमकृपालुभगवान् पुनः तिससौम्यशरीरवाला होइ कै भययुक्त इसअर्जुनकूं आश्वासनकरताभया ॥ ५० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र सोवासुदेवकृष्णभगवान् ताअर्जुनकेप्रति यहपूर्वउक्तवचनकहिकै ताविश्वरूपधारणतैंपूर्व जिसप्रकारकेरूपवालाथा तिसीप्रकारआपणारूप ताअर्जुनकेप्रति पुनः दिखावताभया ॥ अर्थात् मस्तकऊपरिकिरीटकूंधारणकरणेहारा तथाकानोंविषे मकराकृतिकुंडलोंकूंधारणकरणेहारा तथाच्यारोंभुजावोंविषे शंख चक्र गदा पद्म इनच्यारोंकूंधारणकरणेहारा तथा श्रीवत्स कौस्तुभ वनमाला पीतांबर इत्यादिकोंकरिकैशोभायमान इसप्रकारके आपणेपूर्वलेरूपकूं तिस अर्जुनके प्रति पुनः दिखावताभया ॥ तथा सोमहात्माकृष्णभगवान् अर्थात् परमकारुणिक तथासर्वकाईश्वर तथासर्वज्ञ इत्यादिककल्याणोंकाआकाररूप श्रीकृष्णभग वान् पुनः सौम्यवपुहोइकै अर्थात् परमअनुग्रहरूपशरीरवालाहोइकै पूर्वविश्वरूपकेदर्शनतैंभयकूंप्राप्तहुएअर्जुनकेप्रति धैर्ययुक्तवचनोंकरिकै आश्वासनकरताभया इति ॥ ५० ॥ ❋ ॥ तहां श्रीकृष्णभगवान्के तिस पूर्वले चतुर्भुजस्वरूपकेदर्शनतैंअनंतरसोअर्जुन भयतैंरहितहोइकै श्रीकृष्णभगवान्केप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ दृष्ट्वेदंमानुषंरूपंतवसौम्यंजनार्दन ॥ इदानीमस्मिसंवृत्तःसचेताःप्रकृतिंगतः ॥ ५१ ॥ दृष्ट्वा । इदं । मानुषं । रूपं । तव । । सौम्यं । जनार्दन । इदानीम् । अस्मि । संवृत्तः । सचेताः । प्रकृतिं । गतः ॥ ५१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेज नार्दन तुमारे इस मानुषं सौम्य रूपकूं देखिकै अबी मैंअर्जुन अव्याकुलचित्त हुवा हूं तथा स्वस्थताकूं प्राप्तहुआहूं ॥ ५१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेजनार्दन तुमारे इससौम्यमानुषरूपकूंदेखिकै मैंअर्जुन अबी सचेता हुआहूं ॥ अर्थात् पूर्वविश्वरूपकेदर्शनजन्यभयकरिकैकन्येहुएव्यामोहकेअभाव करिकै अबीमैं चित्तकीव्याकुलतातैंरहितहुआहूं ॥ तथा मैंअर्जुन अबीप्रकृतिकूंप्राप्तहुआहूं ॥ अर्थात् तिसभयजन्यव्यथातैंरहितहोणेतैं स्वस्थभावकूंप्राप्तहुआहूं इति ॥ ५१ ॥ ❋ ॥ तहां श्रीभगवान्नैं अर्जुनऊपरिकऱ्याजो विश्वरूपकादर्शनरूपअनुग्रहहै ॥ ताअनुग्रहकीदुर्लभताकूं श्रीभगवान् अबच्यारिश्लोकों करिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ सुदुर्दर्शमिदंरूपंदृष्टवानसियन्मम॥ देवाअप्यस्यरूपस्यानित्यंदर्शनकांक्षिणः ॥५२॥ सुदुर्दर्शम्। इदं। रूपं। दृष्टवानसि। यत्। मम। देवाः। अपि। अस्य। रूपस्य। नित्यं। दर्शनकांक्षिणः ॥ ५२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके जिस विश्वरूपकूं तूंअबी देखताभयाहै यहहमाराविश्वरूप अत्यंतदेखणेकूंअशक्यहै जिसकारणतैं देवता भी नित्यहीं इस विश्वरूपके दर्शनकीइच्छाकरेहैं ॥ ५२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके जिसविश्वरूपकूं तूं अबी देखताभयाहै ॥ सोयहहमाराविश्वरूप अत्यंतदेखणेकूं अशक्यहै ॥ जिसकारणतैं इंद्रादिकदेवताभी सर्वदा इसहमारे विश्वरूपकेदर्शनकीइच्छाहीं करतेरहतेहैं ॥ परंतु जैसे तूं अर्जुन इसहमारेविश्वरूपकूं देखताभयाहैं ॥ तैसे तेइंद्रादिकदेवता पूर्वभी इसहमारे विश्वरूपकूं नहींदेखतेभयेहैं ॥ और आगेभीनहींदेखैंगे इति ॥ ५२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेइंद्रादिकदेवता इसआपकेविश्वरूपकूं किस कारणतैं पूर्व नहीं देखतेभयेहैं तथाआगेनहीं देखैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ मैंपरमेश्वरकीअनन्यभक्तितैंरहितहोणेतैं तेदेवता इसहमारेविश्वरूपकूं पूर्वनहींदेखतेभयेहैं तथा आगेनहीं देखैंगे ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नाहंवेदैर्नतपसानदानेननचेज्यया ॥ शक्यएवंविधोद्रष्टुंदृष्टवानसिमांयथा ॥५३॥ न। अहं। वेदैः। न। तपसा। न। दानेन। न। च। इज्यया। शक्यः। एवंविधः। द्रष्टुं। दृष्टवानसि। मां। यथा ॥ ५३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तूं जिसप्रकारतैं मैंविश्वरूपकूं देखताभयाहै इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर वेदोंकेअध्ययनकरिकैभी देखणेकूं नहीं शक्यहूं तथातपकरिकैभी देखणेकूं नहींशक्यहूं तथादानकरिकैभी देखणेकूं नहींशक्यहूं तथा अग्निहोत्रादिककर्मकरिकैभी देखणेकूं नहींशक्यहूं ॥ ५३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ मैंविश्वरूपरमेश्वरकूं जिसप्रकारतैं तूं अर्जुन अबी देखताभयाहैं ॥ इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर ऋगादिकच्यारिवेदोंकेअध्ययनकरिकैंभी देखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपकरिकैभी मैं देखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तथा तुलापुरुष कन्या गौ सुवर्ण अन्न इत्यादिकपदार्थोंकेदानकरिकैभी मैंदेखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तथा अग्निहोत्रादिकश्रौतस्मार्त्तकर्मोंकरिकैभी मैं देखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तहांपूर्व (नवेदयज्ञाध्ययनैः) इसश्लोकविषे जोअर्थ कथनकऱ्याथा ॥ सोईहींअर्थ (नाहंवेदैर्नतपसा) इसश्लोकविषे जोअबी पुनःकथनकऱ्याहै ॥ सो तिसविश्वरूपकेदर्शनकीअत्यंतदुर्लभताकेबोधनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै

यातैं इसश्लोकविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ ५३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेविश्वरूपवालातूं जबीवेदोंकेअध्ययनकरिकै तथा तपकरिकै तथादानकरिकै तथाअग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै देखणेकूं अशक्यहैं ॥ तबी दूसरेकिसउपायकरिकैतूं देखणेकूंशक्यहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताविश्वरूपकेदर्शनकाउपाय कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) भक्त्यात्वनन्ययाशक्यअहमेवंविधोर्जुन ॥ ज्ञातुंद्रष्टुंचतत्त्वेनप्रवेष्टुंचपरंतप ॥ ५४ ॥ भक्त्या । तु । अनन्यया । शक्यः । अहम् । एवंविधः । अर्जुन । ज्ञातुं । द्रष्टुं । च । तत्त्वेन । प्रवेष्टुं । च । परंतप॥५४॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन हेपरंतप इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर अनन्य भक्तिकरिकै हीं जानणेकूं शक्यहूं तथा वास्तवरूपकरिकै साक्षात्कारकरणेकूं शक्यहूं तथा अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोणेकूं शक्यहूं ॥ ५४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेपरंतप अर्थात् हे अज्ञानरूपशत्रुकूंनाशकरणेहारा अर्जुन ॥ इसप्रकारकेदिव्य विश्वरूपकूंधारणकरणेहारा मैंपरमेश्वर एकअनन्यभक्तिकरिकैहीं जानणेकूंशक्यहूं ॥ अर्थात् सर्वविषयवासनाकापरित्यागकरिकै एकमैंपरमेश्वरविषयक जानिरतिशयप्रीतिरूप अनन्यभक्तिहै ॥ ताअनन्यभक्तिकरिकैहीं यहअधिकारीजन शास्त्ररूपप्रमाणतैं मैंपरमेश्वरकूंजानिसकैहैं ॥ अन्यकिसीभीउपायकरिकै जानिसकतेनहीं ॥हेअर्जुन तिसअनन्यभक्तिकरिकै शास्त्रप्रमाणतैं मैंपरमेश्वर केवल जानणेकूंहीं शक्यनहींहूं॥ किंतु तिसअनन्यभक्तिकरिकै मैंपरमेश्वर वेदांतवाक्योंके श्रवणमनननिदिध्यासनकीपरिपाकताकरिकै आपणेवास्तवस्वरूपतैं साक्षात्कारकरणेकूंभी शक्यहूं ॥ अर्थात् ता अनन्यभक्तिकरिकैं यहअधिकारीपुरुष श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं साक्षात्कारभीकरेहैं ॥ और तिससाक्षात्कारकीप्राप्तितैंअनंतर तिससाक्षात्कारकरिकै अविद्याकेनिवृत्तहुए मैंपरमेश्वर तिनतत्त्ववेत्ताभक्तजनोंकूं आपणेवास्तवस्वरूपतैं प्राप्तहोणेकूंभी शक्यहूं ॥ अर्थात् तिनतत्त्ववेत्ताभक्तजनोंकूं मैंपरमेश्वर आपणाआत्मारूपकरिकैंप्राप्तहोवूंहूं ॥ ईहां (हेपरंतप) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकूं अज्ञानरूपशत्रुकीनिवृत्तिकरिकै आपणेअद्वितीयनिर्गुणस्वरूपविषै अभेदरूपकरिकै प्रवेशकीयोग्यता सूचनकरी ॥ और (शक्यःअहम्) इसवचनकेस्थानविषे यद्यपि (शक्योऽहं) इसप्रकारकावचन चाहीताथा ॥ तथापि शक्य इसपदतैंउत्तर जो विसर्गोकालोपकर्‍याहै ॥ सो पूर्वकीन्यांई छांदसहै इति ॥ ५४ ॥

❀ ॥ अब श्रीभगवान्नैं समग्रगीताशास्त्रका सारभूतअर्थ मुमुक्षुजनोंकेअनुष्ठानवासतै एकठाकरिकै कथनकरीताहै ॥

(मू० श्लो०) मत्कर्मकृन्मत्परमोमद्भक्तःसंगवर्जितः ॥ निर्वैरःसर्वभूतेषुयःसमामेतिपांडव ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु

ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविश्वरूपदर्शनंनामएकादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ११ ॥ मत्कर्मकृत् । मत्परमः । मद्भक्तः । संगवर्जितः । निर्वैरः । सर्वभूतेषु । यः । सः । माम् । एति । पांडव ॥ ५५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपांडव जोपुरुष मत्कर्मकृतहै तथामत्परमहै तथामेराभक्तहै तथासंगतैंरहितहै तथासर्वभूतोंविषे निर्वैरहै सोपुरुषहीं मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवै है ॥ ५५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेपांडव अर्थात् हेपांडुराजाकेपुत्रअर्जुन जोअधिकारीपुरुष मत्कर्मकृतहै ॥ अर्थात् जोअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नतावासतैहीं वेदविहित अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्त्तकर्मोंकूंकरेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् स्वर्गादिकफलोंकीकामनावोंकेविद्यमानहुए इसअधिकारीपुरुषविषे सोमत्कर्मकृत्पणा कैसेसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (मत्परमःइति) हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष मत्परमहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरहींहूं प्राप्तरूपकरिकैनिश्चितजिसकूं दूसरे स्वर्गादिकफल जिसकूं प्राप्तव्यरूपकरिकैनिश्चितहैं नहीं तिसपुरुषकानाम मत्परमहै ॥ जिसकारणतैं सोअधिकारीपुरुष मत्कर्मकृतहै तथामत्परमहै ॥ तिसकारणतैं हीं सोअधिकारीपुरुष मद्भक्तहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेप्राप्तिकीआशाकरिकै जोअधिकारीपुरुष सर्वप्रकारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकेभजनपरायणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् पुत्रादिकपदार्थोंविषेस्नेहकेविद्यमानहुए तिसअधिकारीपुरुषविषे सौतुमाराभक्तपणाभी कैसेसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (संगवर्जितः इति) जोअधिकारीपुरुष संगतैंरहितहै ॥ अर्थात् पुत्र स्त्री धन गृह इसतैं आदिलेकेजितनैंकीबाह्यअनात्मपदार्थहैं तिनसर्वपदार्थोंकी इच्छातैंरहितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् शत्रुवोंविषेद्वेषकेविद्यमानहुए तिसअधिकारीपुरुषविषे सोसंगतैरहितपणाभी कैसेसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (निर्वैरःसर्वभूतेषु इति) हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष सर्वभूतोंविषेवैरतैंरहितहै ॥ अर्थात् जेप्राणी आपणाअपकारकरेहैं ऐसेअपकारीप्राणीयोंविषेभी जोपुरुष द्वेषतैंरहितहै ॥ हेअर्जुन इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष मत्कर्मकृतहै तथामत्परमहै तथामद्भक्तहै तथासंगतैंरहितहै तथासर्वभूतोंविषे निर्वैरहै ॥ सोअधिकारी पुरुषहींमैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ हेअर्जुन यहजो सर्वशास्त्रकासारभूतअर्थ हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकर्‍याहै ॥ सोयहअर्थहीं तुमारेकूं जानणेयोग्यहै ॥ इस अर्थके जानणेतैंपरे दूसराकोई तुमारेकूंकर्त्तव्यनहींहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (मत्परमः) इसपदका यह अर्थ कथनकर्‍याहै ॥ मीयतेपदार्थोऽनयाइति मा ॥ अर्थयह जिसकरिकै पदार्थ निश्चयकर्‍याजावैहै ताकानाम माहै ॥ अर्थात् नेत्रादिकइंद्रियजन्यअंतःकरणकीवृत्तिकरिकैहीं सर्वपदार्थ निश्चयकर्‍येजावैहैं ॥ यातैं ताइंद्रियजन्यवृत्तिकानाम माहै ॥ तहां मत्पराहै क्या सर्वत्रमैंपरमेश्वरकेस्वरूप ग्रहणपराहै साइंद्रियजन्यवृत्तिरूप मा जिसपुरुषकी ताकानाम मत्परमहै इति॥